हरिभूमि
भिवानी-दादरी भूमि
रोहतक, रविवार, 14 सितंबर 2025

11 विश्वविद्यालय का शैक्षणिक माहौल होगा समृद्ध...

12 लंबित मांगों को लेकर रोडवेज कर्मचारियों ने सौंपा ज्ञापन...

डॉ. अरुण कुमार
कंसल्टेंट - बाल एवं नवजात शिशु रोग विशेषज्ञ
MBBS, MD (PEDIATRICS) , IPPN (AUSTRALIA), ADVANCED FELLOWSHIP IN NEONATOLOGY (UK)
7+ वर्षों का अनुभव
MK हॉस्पिटल भिवानी
डॉ. अरुण कुमार का हार्दिक स्वागत करता है |
डॉ.अरुण कुमार MK हॉस्पिटल में बाल एवं नवजात शिशु रोग विशेषज्ञ के रूप में अपनी सेवाएं देंगे |
पूर्व अनुभव :- पीजीआईएमईआर, चंडीगढ़ | श्री वेंकटेश्वरा मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर , पुडुचेरी | स्पर्श मल्टी-स्पेशलिटी हॉस्पिटल, शिमला.
आयुष्मान व हरियाणा सरकार पैनल पर उपलब्ध*
TPA और कैशलेस सुविधा उपलब्ध
NABH मान्यता प्राप्त हॉस्पिटल

+91 70 09 09 09 24
5th Mile Stone, Bhiwani - Delhi Road, Bhiwani, Haryana

खबर संक्षेप

हेरोइन सहित दो युवकों को किया गिरफ्तार

भिवानी। पुलिस टीम के द्वारा आरोपियों से कुल 8 ग्राम 19 मिलीग्राम हेरोइन बरामद कर एक मोटरसाइकिल को कब्जे में लिया गया। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार पुलिस के सीआईए स्टाफ-2 ने हिसार से मादक पदार्थ लेकर आ रहे दो आरोपियों को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। गिरफ्तार किए गए आरोपियों की पहचान नरेश पुत्र गुलाब निवासी वार्ड नंबर- 8 राजीव नगर तोशाम व रणबीर पुत्र भीम सिंह निवासी भहराण थाना महम जिला रोहतक हाल निवासी बीपीएल कॉलोनी तोशाम के रूप में हुई है। आरोपी नरेश से 5 ग्राम 52 मिलीग्राम व आरोपी रणबीर से 2 ग्राम 67 मिलीग्राम मादक पदार्थ हेरोइन को बरामद किया गया है।

भिवानी। पुलिस हिरासत में गाड़ी से टक्कर मारकर जख्मी करने के आरोपी।

गाड़ी से टक्कर मारने के दो आरोपित गिरफ्तार

भिवानी। पुलिस की स्पेशल स्टाफ सिवानी ने मोटरसाइकिल सवार व्यक्तियों पर जान से मारने नियत से कई बार गाड़ी की टक्कर मारने के मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। विक्रम निवासी बहल ने थाना बहल पुलिस को बार बार मोटरसाइकिल को टक्कर माने की शिकायत दर्ज करवाई थी।आरोपियों की पहचान विनोद उर्फ धयाला पुत्र राम सिंह निवासी बहल व अनिल उर्फ खरसू पुत्र बलराज निवासी शेरला के रूप में हुई है।

खराब फसल की वेरिफिकेशन जारी

चरखी दादरी। बारिश के कारण फसलों को हुए नुकसान की भरपाई के लिए जिला में युद्ध स्तर पर कार्य शुरू हो गया है। हालांकि 15 सितंबर तक फसलों को हुए नुकसान की रिपोर्ट आई क्षतिपूर्ति पोर्टल पर दर्ज करवाई जा सकती है। उपायुक्त डा. मुनीष नागपाल के निर्देश पर अभी से ही राजस्व विभाग के अधिकारी व कर्मचारी फसल खराबा की वेरिफिकेशन में जुट गए हैं।

पानी की निकासी नहीं होने पर बिफरे धनाना के ग्रामीण

पलंग डालकर और वाहन खड़े कर जींद-भिवानी रोड पर लगाया जाम

कार्यकारी अभियंता के आश्वासन के बाद दो घंटे में खोला रास्ता

प्रदर्शनकारियों ने चेतावनी दी कि अगर उनकी मांग पूरी नहीं की गई तो वे फिर से रोड पर उतरने को मजबूर होंगे और इसका जिम्मेदार प्रशासन होगा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

भिवानी। गांव धनाना में पानी की निकासी की मांग को लेकर रोड जाम करते प्रदर्शनकारी और जाम लगा रहे लोगों को समझाती पुलिस। फोटो : हरिभूमि

पानी की निकासी की मांग को लेकर गांव धनाना के ग्रामीणों ने दो घंटे तक भिवानी जींद मार्ग पर जाम लगाया। इस दौरान ग्रामीणों ने सरकार के खिलाफ नारेबाजी की। बाद में सिंचाई विभाग के कार्यकारी अभियंता मौके पर पहुंचे और जल्द ही उनकी समस्या का समाधान करवाए जाने का भरोसा दिलाया। तब जाकर प्रदर्शनकारी शांत हुए। प्रदर्शनकारियों ने चेतावनी दी कि अगर उनकी मांग पूरी नहीं की गई तो वे फिर से रोड पर उतरने को मजबूर होना पड़ेगा।

सड़क के बीच में बैठ लोग

शनिवार को साढ़े दस बजे गांव धनाना के लोग भिवानी जींद मार्ग पर उतर आए। ग्रामीणों ने लकड़ी व पत्थर डालकर वाहनों को रोकना आरंभ कर दिया। इस दौरान कुछ ग्रामीण लकड़ी के तख्त लेकर सड़क के बीच में बैठ गए। इस दौरान ग्रामीणों ने सरकार के खिलाफ नारेबाजी की। जाम की सूचना मिलते ही सदर थाना पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने लोगों से जाम हटाने के लिए कहा,लेकिन प्रदर्शनकारी मौके पर सिंचाई विभाग के अधिकारियों के आने की बात पर अड़ गए। बाद में पुलिस अधिकारी ने इस बारे में सिंचाई विभाग के अधिकारियों को सूचित किया। सूचना मिलते ही सिंचाई विभाग के कार्यकारी अभियंता मौके पर पहुंचे और लोगों को उनकी समस्या का जल्द समाधान करवाए जाने का भरोसा दिलाया। तक जाकर ग्रामीण जाम खोलने को राजी हुए। जाम खुलने के बाद वाहन चालकों ने राहत की सांस ली।

नहीं करवाई ड्रेन की सफाई

ग्रामीणों ने बताया कि बारिश से पहले ड्रेन की सफाई नहीं करवाई, जिस वजह ड्रेन बार बार ओवर हो रही है। ड्रेन के ओवर होने से पानी की निकासी होने की बजाए वापस पानी उनके घरों व खेतों में पहुंच रहा है। ग्रामीणों ने यह भी बताया कि पानी की निकासी के लिए प्रशासन द्वारा पम्पसेट आदि नहीं दिए गए है। अगर पम्पसेट नहीं होंगे तो वे किस तरह से पानी की निकासी कर पाएंगे। ग्रामीणों ने चेतावनी दी कि अगर उनकी समस्या का जल्द समाधान नहीं किया गया तो वे फिर से उक्त रोड पर उतरने को मजबूर होंगे।

स्कूल से पानी निकासी नहीं होने को लेकर प्रदर्शन

■ पानी की निकासी न होने से बच्चों की पढ़ाई पूरी तरह से प्रभावित हो रही है

भिवानी। वार्ड एक के सेकटर-13 स्थित सरकारी स्कूल में जमा बारिश के पानी की निकासी को लेकर पार्षद सूर्या तंवर की अगुवाई में लोगों ने प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने जिला प्रशासन से जल्द पानी की निकासी करवाए जाने की मांग की। पानी की निकासी न होने से स्कूल में बच्चों की पढाई पूरी तरह से प्रभावित हो रही है। पार्षद सूर्या तंवर ने बताया कि बारिश के बाद से ही सरकारी पाठशाला में बारिश का पानी जमा है। सबसे ज्यादा पानी स्कूल परिसर में जमा है। जिस वजह से स्कूल में मच्छरों की भरमार है। मच्छरों की वजह से बच्चे पढ भी नहीं पा रहे है। दूसरी तरफ पानी में अनेक तरह के जहरीले जीव जंतु पनप रहे है। जिसके चलते उनके काटने का हमेशा भय बना रहता है। इसी तरह सेक्टर 13 में भी अनेक जगहों पर बारिश का पानी है। जमा पानी के उपर मच्छर भिनभिना रहे है। उन्होंने बताया कि इस बारे में कई बार जिला प्रशासन व अधिकारियों से शिकायत की,लेकिन आज तक उनकी इस समस्या का समाधान नहीं हो पाया है। उन्होंने जिला प्रशासन से जल्द ही सरकारी स्कूल व सेक्टर में जमा पानी की निकासी करवाए जाने की मांग की है।

भिवानी। गांव बडेसरा के खेतों में जमा पानी का दृश्य। फोटो : हरिभूमि

पानी निकासी को लेकर सरकार नहीं कर रही संजीदगी से कार्य

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

■ हरियाणा कांग्रेस सेवादल के पूर्व कार्यकारी प्रधान अशोक कादियान ने किसानों की दुर्दशा को लेकर सरकार पर बोला तीखा हमला

हरियाणा कांग्रेस सेवादल के पूर्व कार्यकारी प्रधान अशोक कादियान ने किसानों की दुर्दशा को लेकर भाजपा सरकार पर तीखा हमला बोला है। कादियान ने आरोप लगाया है कि भारी बारिश के कारण खेतों में हुए जलभराव की निकासी को लेकर सरकार पूरी तरह से नाकाम रही है, जिसके चलते किसानों की फसलें बर्बाद हो गई हैं। उन्होंने कहा कि सरकार किसानों की समस्याओं का समाधान करने के लिए गंभीर नहीं है और उन्हें उनकी बदहाली पर अकेला छोड़ दिया है।

कादियान ने कहा कि हाल ही में हुई अत्याधिक बारिश ने हरियाणा के किसानों के लिए भारी संकट खड़ा कर दिया है। खेतों में पानी भर जाने से किसानों की फसलें पूरी तरह से बर्बाद हो गई हैं। उन्होंने बताया कि जलभराव के कारण खेतों में कई-कई दिनों तक पानी खड़ा रहा, जिससे फसलें गल गईं और किसानों को भारी नुकसान हुआ। कादियान ने सरकार की चुप्पी पर सवाल उठाते हुए कहा कि इतनी बड़ी आपदा के बाद भी सरकार मौन बैठी है। उन्होंने कहा कि किसानों की बर्बाद हुई फसलों का सर्वे करवाने और उन्हें उचित मुआवजा देने के लिए सरकार कोई कदम नहीं उठा रही है। कादियान ने आरोप लगाया कि सरकार ने किसानों को उनकी दुर्दशा के साथ अकेला छोड़ दिया है और उनकी समस्याओं का समाधान करने के लिए कोई संजीदगी नहीं दिखा रही है। कादियान ने सरकार से तत्काल राहत प्रदान करने की मांग की है। उन्होंने कहा कि सरकार को तुरंत फसलों के नुकसान का आकलन करने के लिए विशेष टीमें गठित करनी चाहिए और प्रभावित किसानों को बिना किसी देरी के मुआवजा देना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि सरकार को भविष्य में इस तरह की स्थिति से निपटने के लिए जल निकासी की व्यवस्था को मजबूत करना चाहिए।

एसडीएम ने लिया बरसात से खराब हुई फसलों का जायजा

बाढड़ा। एसडीएम आशीष सांगवान ने शनिवार को क्षेत्र के गाँव लाड, भांडवा, हंसावास कला व हंसावास खुर्द का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने खेतों में जाकर हाल ही में हुई बरसात से खराब हुई फसलों का जायजा लिया। किसानों ने एसडीएम को मौके पर ही फसलों की स्थिति से अवगत कराया और हुए नुकसान की जानकारी दी। इस दोरान किसानो ने एसडीएम ने किसानों से फसल खराबे के बारे में विस्तार से चर्चा की तथा नुकसान हुई फसलों के बारे में जानकारी ली।

एसडीएम ने किसानों को आश्वस्त किया कि उनकी समस्या और नुकसान की रिपोर्ट तैयार कर सरकार को भेजी जाएगी ताकि समय पर मुआवजा दिलवाया जा सके। उन्होंने राजस्व विभाग की टीम को निर्देश दिए कि खेत-खेत जाकर सर्वे किया जाए और सटीक आंकड़े रिपोर्ट में दर्ज किए जाएं। किसानों ने प्रशासन से शीघ्र ही मुआवजा दिलाने की मांग की। ग्रामीणों ने बताया कि लगातार हो रही बारिश से कपास, बाजरा और अन्य फसलें भारी रूप से प्रभावित हुई हैं, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति पर असर पड़ा है।

राष्ट्रीय लोक अदालत में 12767 केसों का किया निपटान : सीजेएम

■ दोनों पक्षों की सहमति से मामलों को सौहार्दपूर्ण ढंग से सुलझाती हैं लोक अदालतें : सीजेएम

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

भिवानी। शनिवार को आयोजित राष्ट्रीय लोक अदालत में केसों की सुनवाई करते हुए। फोटो : हरिभूमि

हरियाणा राज्य विधिक सेवायें प्राधिकरण के आदेशानुसार एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के चेयरमैन व जिला एवं सत्र न्यायाधीश डीआर. चालिया के मार्गदर्शन में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव एवं सीजेएम पवन कुमार ने बताया कि शनिवार को जिला मुख्यालय के अलावा तोशाम, सिवानी व लोहारू न्यायिक परिसर में भी इस वर्ष की तीसरी राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया गया।

सीजेएम पवन कुमार ने बताया कि लोक अदालत वैकल्पिक विवाद समाधान की एक प्रणाली है जो भारत में बदलते समय के साथ एक प्रणाली के रूप में स्थापित हुई है। लोक अदालतें न केवल लंबित विवाद या पार्टियों के बीच उत्पन्न होने वाले विवादों को सुलझाती हैं, बल्कि यह सामाजिक सद्भाव को भी सुनिश्चित करती है क्योंकि विवाद करने वाले पक्ष अपने मामलों को अपनी पूर्ण संतुष्टि के साथ सौहार्दपूर्ण ढंग से सुलझाते हैं। इससे अदालतों के लंबित मामलों में कमी आती है, क्योंकि अपील और संशोधन के रूप में आगे की कार्यवाही को भी समाप्त कर पक्षों की सहमति से मामलों को सौहार्दपूर्ण ढंग से सुलझाया जाता है और त्वरित और प्रभावी तरीके से न्याय दिलाने के लिए उन्हें उपलब्ध कराया जाता है। विवाद के निपटारे के अलावा, पक्षकारों को मामलों की उनके द्वारा भुगतान की गई अदालती फीस की वापसी का लाभ होता है। मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी पवनकुमार ने कहा कि लोक अदालत में अपराधिक मोटर वाहन दुर्घटना, पारिवारिक मामले, चालान, बैंक ऋण, दीवानी मामले, चेक बाउंस, राजस्व आदि से संबंधित मामले रखे गए। इस दौरान दोनों पक्षों के अभिवक्तागण, पैनल अधिवक्तागण, अधिकारमित्र (पीएलवी) और कानून के विद्यार्थी भी मौजूद रहे।

24,824 मामले रखे गए

सीजेएम ने बताया इस आयोजित राष्ट्रीय लोक अदालत में भिवानी की लोक अदालत में रखे गए कुल 24824 में से 12767 मामलों का निपटारा गया तथा 114357341 रुपये की कुल राशि का निपटान किया गया। जो कि लोहारू में 140 में से 56, तोशाम में 45 में से 40, सिवानी में 181 में से 131 मामलों का मौके पर ही निपटारा किया गया। प्राधिकरण के सचिव एवं मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी ने बताया कि जिला मुख्यालय पर अतिरिक्त प्रिंसिपल जज फैमिली कोर्ट भिवानी रुपम, अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश आशीष कुमार शर्मा, सीजेएम मीता कोहली, सीजे(जेडी)-कम-जेएमआईसी भिवानी अंतरप्रीत सिंह, सीजे (जेडी)-कम-जेएमआईसी भिवानी सृष्टि, एसीजे(एसडी)-कम-एसडीजेएम सिवानी मोहम्मद जकारिया खान, एसीजे(एसडी)-कम-एसडीजेएम तोशाम सुनील कुमार तथा सीजे(जेडी)-कम-जेएमआईसी लोहारु हिमांशु जांगड़ा आदि की कोर्टों में मामले रखे गए।

विधायक सुनील सांगवान ने ग्रामीणों को दिया आश्वासन

जल निकासी के पुख्ता प्रबंध, नुकसान की होगी भरपाई

■ ग्रामीणों ने बताया कि जल्द पानी निकल जाएगा तो रबी फसलों की बिजाई हो जाएगी अन्यथा परेशानी हो सकती है

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

विधायक सुनील सांगवान ने कहा कि जल निकासी के लिए जहां विभिन्न विभागों द्वारा पुख्ता प्रबंध किए हैं और लगातार पानी निकाला जा रहा है।

वहीं अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि वे जल्द से जल्द प्रभावित क्षेत्रों में पानी निकालें। ताकि आगामी रबी फसलों की बिजाई समय पर हो सके। वहीं विधायक ने आश्वासन दिया कि बारिश से खराब फसलों की भरपाई करवाई जाएगी। इसके लिए सरकार द्वारा ई-क्षतिपूर्ति पोर्टल 15 सितंबर तक खोला गया है। जिस भी किसान की बारिश व जलभराव से फसल तबाह हुई है। वे इस पोर्टल पर जाकर अपनी फसलों का ब्यौरा दर्ज कर सकते है।

विधायक सुनील सांगवान के निवास पर कई गांवों की पंचायतें पहुंची और जलभराव क्षेत्रों में जल्द पानी निकासी की मांग उठाई। ग्रामीणों ने विधायक को बताया कि जल्द पानी निकल जाएगा तो रबी फसलों की बिजाई हो जाएगी। विधायक सुनील सांगवान ने तुरंत संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि प्रभावित क्षेत्रों में ज्यादा मोटरें लगाकर पानी की निकासी जल्द करें।

विधायक ने जन समस्याएं भी सुनीं

विधायक ने कहा कि बारिश से फसलों के खराबे की भरपाई ई-क्षतिपूर्ति पोर्टल के माध्यम से करवाई जाएगी। इस बारे संबंधित अधिकारियों को तय समय में रिपोर्ट तैयार कर सरकार को भेजने की बात कही है। स्वयं मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी भी किसानों की खराब फसलों की भरपाई करने बारे घोषणा कर चुके हैं। ताकि जिन किसानों की फसलें बर्बाद हुई है। तत्काल गिरदावरी करवाकर उचित मुआवजा दिलाया जाए। वहीं विधायक सुनील सांगवान ने जन समस्याएं सुनी और समाधान बारे अधिकारियों को निर्देश दिए।

भिवानी मंडल के सचिव ने किया उप डाकघर का दौरा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

■ कर्मचारियों को शोषण से मुक्ति दिलाना ही संघ व उनका उद्देश्य : खोरडिया

भारतीय डाक कर्मचारी संघ के भिवानी मंडल के सचिव प्रवीण कुमार खोरडिया ने भिवानी मंडल के आधीन आने वाले दादरी उप डाकघर का दौरा कर डाक विभाग के कर्मचारियों की समस्याओं को सुना। उन्होंने कर्मचारियों के शोषण को रोकने और उनकी शिकायतों का समाधान करने को अपनी सर्वोच्च प्राथमिकता बताया।

इस मौके पर एक बैठक का भी आयोजन किया। जिसमें सचिव खोरडिया ने कर्मचारियों की विभिन्न समस्याओं पर चर्चा की और उनमें से अधिकांश का तत्काल समाधान करवाया। शेष समस्याओं के लिए उन्होंने अधिकारियों से बात कर उनका जल्द से जल्द हल निकालने का आश्वासन दिया। इस मौके पर भारतीय डाक कर्मचारी संघ के भिवानी मंडल के सचिव प्रवीण कुमार खोरडिया ने जोर देकर कहा कि वे भारतीय डाक कर्मचारी संघ के मूल उद्देश्यों के प्रति पूरी तरह समर्पित हैं।

उन्होंने कर्मचारियों को भरोसा दिलाया कि उनकी हर समस्या को गंभीरता से लिया जाएगा और अधिकारियों के सामने उठाया जाएगा, ताकि उन्हें किसी भी तरह के शोषण का सामना न करना पड़े।

फ्लेक्सी कैप, मिड कैप और लार्ज कैप फंड्स में बढ़ा निवेश

■ इक्विटी फंड्स का नेट इनफ्लो 22% तक घटा ■ एएमएफआई ने अगस्त 2025 के आंकड़े जारी किए ■ अगस्त 2025 इक्विटी म्यूचुअल फंड्स के लिए मिला-जुला महीना रहा

बिजनेस डेस्क

एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया (एएमएफआई) ने अगस्त 2025 के निवेश और रिडेम्पशन के लेटेस्ट आंकड़े जारी कर दिए हैं। ये आंकड़े म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री के ताजा रुझानों की दिलचस्प तस्वीर पेश करते हैं। अगस्त 2025 में निवेशकों ने जहां एक ओर इक्विटी फंड्स में लगातार पैसे डाले हैं, वहीं डेट फंड्स से बड़े पैमाने पर पैसे निकाले गए हैं। आंकड़ों के मुताबिक अगस्त 2025 इक्विटी म्यूचुअल फंड्स के लिए मिला-जुला महीना रहा। कुल नेट इनफ्लो 33,430 करोड़ रुपये रहा, जो जुलाई 2025 के 42,702 करोड़ रुपये की तुलना में करीब 22% कम है। हालांकि यह गिरावट दिखाती है कि निवेशक थोड़े सावधान हो गए हैं, लेकिन यह भी सच है कि यह लगातार 54वां महीना है जब इक्विटी फंड्स में नेट इनफ्लो देखने को मिला।

फ्लेक्सी, मिड और लार्ज कैप में इनफ्लो बढ़ा

अगस्त में सबसे ज्यादा निवेश फ्लेक्सी कैप फंड्स में आया। इस कैटेगरी में 7,679 करोड़ रुपये का नेट इनफ्लो दर्ज हुआ, जो जुलाई के 7,654.33 करोड़ रुपये के नेट-इनफ्लो के मुकाबले थोड़ा बेहतर रहा। मिड कैप फंड्स में भी 5,330 करोड़ रुपये का इनफ्लो रहा, जबकि जुलाई में यह 5,182 करोड़ रुपये था। दिलचस्प बात यह रही कि लार्ज कैप फंड्स में 2,835 करोड़ रुपये का नेट निवेश आया, जो जुलाई के 2,125 करोड़ रुपये से 33% ज्यादा रहा। हालांकि, स्मॉल कैप फंड्स में निवेश की रफ्तार थोड़ी धीमी पड़ी और इसमें नेट इनफ्लो जुलाई के 6,484 करोड़ रुपये से घटकर अगस्त में 4,993 करोड़ रुपये रह गया।

डेट फंड्स में निकासी का दबाव

अगस्त 2025 में डेट म्यूचुअल फंड्स ने बड़ा झटका खाया। कुल मिलाकर इस कैटेगरी से 7,980 करोड़ रुपये का नेट आउटफ्लो हुआ। यह तब है जब जुलाई 2025 में इन्हीं फंड्स में 1.07 लाख करोड़ रुपये का नेट इनफ्लो दर्ज हुआ था। कई सब-कैटेगरी जैसे कॉरपोरेट बॉन्ड फंड्स, बैंकिंग एवं पीएसयू फंड्स और गिल्ट फंड्स से पैसे निकाले गए। इसका बड़ा कारण कॉर्पोरेट्स और संस्थागत निवेशकों की तरफ से मनी मार्केट और लिक्विड फंड्स से निकासी बताई जा रही है, जो आमतौर पर तिमाही खत्म होने के बाद होती है।

हाइब्रिड फंड्स का आकर्षण बरकरार

हाइब्रिड फंड्स में निवेशकों का भरोसा जारी रहा। अगस्त में इसमें 15,294 करोड़ रुपये का नेट इनफ्लो दर्ज हुआ। हालांकि यह जुलाई के 20,879 करोड़ रुपये से कम है, लेकिन फिर भी इससे संकेत मिलता है कि निवेशक बैलेंस्ड और डायनैमिक स्ट्रेटजी वाले फंड्स को पसंद कर रहे हैं।

गोल्ड ईटीएफ और इंडेक्स फंड्स रहे फेवरिट

गोल्ड ईटीएफ अगस्त में निवेशकों के बीच काफी पॉपुलर रहे. इनमें 2,190 करोड़ रुपये का नेट इनफ्लो आया, जो जुलाई के 1,256 करोड़ रुपये की तुलना में करीब 74% ज्यादा है. इससे यह भी पता चलता है कि सोने की कीमतों में लगातार मजबूती और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मौजूदा चुनौतियों के कारण निवेशक गोल्ड को सुरक्षित ऑप्शन मान रहे हैं। इंडेक्स फंड्स और अन्य ईटीएफ का आकर्षण भी बरकरार है। अगस्त में इंडेक्स फंड्स का एयूएम करीब 3.04 लाख करोड़ रुपये और नेट इनफ्लो 1,503 करोड़ रुपये रहा, जबकि अन्य ईटीएफ का एयूएम करीब 8.42 लाख करोड़ रुपये और नेट इनफ्लो 7,244 करोड़ रुपये रहा।

एनएफओ कलेक्शन में भारी गिरावट

जुलाई में म्यूचुअल फंड्स की 30 नई स्कीम्स या न्यू फंड ऑफर (एनएफओ) लॉन्च हुए थे और उनके जरिये 30,416 करोड़ रुपये जुटाए गए थे। लेकिन अगस्त में एनएफओ की संख्या घटकर 23 और जुटाई गई रकम सिर्फ 2,859 करोड़ रुपये रह गई।

फोलियो नए रिकॉर्ड पर, कुल एयूएम घटा

इंडस्ट्री का कुल एयूएम अगस्त में 75.19 लाख करोड़ रुपये रहा, जो जुलाई के 75.36 लाख करोड़ रुपये से मामूली रूप से कम है, लेकिन इस दौरान फोलियो की कुल संख्या बढ़कर 24.89 करोड़ हो गई। जुलाई में यह संख्या 24.57 करोड़ थी। यानी निवेशकों के लगभग 32 लाख नए खाते जुड़े, जो यह दिखाता है कि छोटे निवेशक लगातार इस इंडस्ट्री का हिस्सा बन रहे हैं। अगस्त 2025 का महीना इस लिहाज से अहम रहा कि इक्विटी फंड्स में पैसे आते रहे, लेकिन रफ्तार धीमी हुई। फ्लेक्सी कैप, मिड कैप और लार्ज कैप फंड्स में निवेशकों का भरोसा दिखा, जबकि स्मॉल कैप में सावधानी दिखी। दूसरी ओर, डेट फंड्स ने करारा झटका खाया. हाइब्रिड फंड्स और गोल्ड ईटीएफ निवेशकों को आकर्षित करते रहे।

निवेश का जैकपॉट : कुछ इक्विटी फंड्स ने 10 साल में दिया 533 से 678% तक रिटर्न

लंबी अवधि का मानक 10 साल मानें तो कई इक्विटी म्यूचुअल फंड सबसे बेहतर

सात फंड ऐसे हैं, जिनमें 20% सालाना से अधिक रिटर्न निवेशको को मिला

इन फंड्स को खरीदने वाले निवेशक भी मालामाल, जमकर किया निवेश

बिजनेस डेस्क

अगर आप भी निवेशक हैं या निवेश करने जा रहे हैं तो एक बार बाजार के बारे में रिसर्च जरूर कर लें। इससे आपको निवेश में आसानी रहेगी और पैसे का नुकसान नहीं होगा। बाजार में पैसा लगाने से पहले अपनी रिस्क क्षमता और लक्ष्य को जान लें। इसके बाद निवेश करेंगे जो मुनाफे में ही रहेंगे। म्यूचुअल फंड में निवेश करने जा रहे हैं तो हमेशा लंबी अवधि का लक्ष्य लेकर चलें। म्यूचुअल फंड लंबी अवधि के निवेश के लिए सबसे अच्छे विकल्पों में एक माने जाते हैं। निवेश की अवधि जितना अधिक होगी, कंपाउंडिंग का उतना ज्यादा फायदा मिलेगा। लंबी अवधि का मानक 10 साल मानें तो कई इक्विटी म्यूचुअल फंड स्कीम निवेशकों के लिए जैकपॉट साबित हुई हैं। इनमें से 7 फंड तो ऐसे हैं, जिनमें 20 फीसदी सालाना से अधिक रिटर्न मिला है। इनका 10 साल में एबसॉल्यूट रिटर्न 533 से 678 फीसदी रहा है। इसका मतलब है कि इन्होंने इस अवधि में निवेशकों का पैसा 6 से 7.5 गुना बढ़ा दिया। हमने इस रिपोर्ट में ईटीएफ को शामिल नहीं किया है।

म्यूचुअल फंड में निवेश करने जा रहे हैं तो हमेशा लंबी अवधि का लक्ष्य लेकर चलें

●

बाजार में पैसा लगाने से पहले अपनी रिस्क क्षमता और लक्ष्य को पहचान लें

निप्पॉन इंडिया स्मॉल कैप फंड

- 5 साल का रिटर्न : 22.78% सालाना
- 1 लाख निवेश की वैल्यू : 7,78,532 रुपये (7.79 लाख)
- रेटिंग : 5 स्टार
- कुल एसेट्स : 64,821 करोड़ रुपये (31 अगस्त, 2025)
- एक्सपेंस रेश्यो : 0.64% (31 अगस्त, 2025)

क्वांट ईएलएसएस टैक्स सेवर फंड

- 5 साल का रिटर्न : 21.86% सालाना
- 1 लाख निवेश की वैल्यू : 7,22,124 रुपये (7.22 लाख)
- रेटिंग : 3 स्टार
- कुल एसेट्स : 11,396 करोड़ रुपये (31 अगस्त, 2025)
- एक्सपेंस रेश्यो : 0.58% (31 अगस्त, 2025)

एचडीएफसी स्मॉल कैप फंड

- 5 साल का रिटर्न : 20.47% सालाना
- लाख निवेश की वैल्यू : 6,43,857 रुपये (6.44 लाख)
- रेटिंग : 4 स्टार
- कुल एसेट्स : 36,294 करोड़ रुपये (31 अगस्त, 2025)
- एक्सपेंस रेश्यो : 0.69% (31 अगस्त, 2025)

एक्सिस स्मॉल कैप फंड

- 5 साल का रिटर्न : 20.46% सालाना
- 1 लाख निवेश की वैल्यू : 6,43,622 रुपये (6.43 लाख)
- रेटिंग : 3 स्टार
- कुल एसेट्स : 25,569 करोड़ रुपये (31 अगस्त, 2025)
- एक्सपेंस रेश्यो : 0.57% (31 अगस्त, 2025)

इन्वेस्को इंडिया मिड कैप फंड

- 5 साल का रिटर्न : 20.39% सालाना
- 1 लाख निवेश की वैल्यू : 6,39,594 रुपये (6.40 लाख)
- रेटिंग : 4 स्टार
- कुल एसेट्स : 8,063 करोड़ रुपये (31 अगस्त, 2025)
- एक्सपेंस रेश्यो : 0.56% (31 अगस्त, 2025)

एसबीआई स्मॉल कैप फंड

- 5 साल का रिटर्न : 20.30% सालाना
- 1 लाख निवेश की वैल्यू : 6,34,828 रुपये (6.35 लाख)
- रेटिंग : 3 स्टार
- कुल एसेट्स : 35562.96 करोड़ रुपये (31 अगस्त, 2025)
- एक्सपेंस रेश्यो : 0.73% (31 अगस्त, 2025)

क्वांट स्मॉल कैप फंड

- 5 साल का रिटर्न : 20.25% सालाना
- 1 लाख निवेश की वैल्यू : 6,32,195 रुपये (6.32 लाख)
- रेटिंग : 4 स्टार
- कुल एसेट्स : 28,758 करोड़ रुपये (31 अगस्त, 2025)
- एक्सपेंस रेश्यो : 0.72% (31 अगस्त, 2025)

क्या हैं इक्विटी फंड

इक्विटी फंड एक प्रकार का म्यूचुअल फंड है जो मुख्य रूप से शेयर बाजार में निवेश करता है। इसका उद्देश्य निवेशकों को शेयर बाजार में निवेश करने का अवसर प्रदान करना है, जिससे वे अपने निवेश पर अच्छा रिटर्न प्राप्त कर सकें।

इक्विटी फंड के प्रकार

1. **लार्ज-कैप फंड:** ये फंड बड़े कैप शेयरों में निवेश करते हैं, जो आमतौर पर अच्छी तरह से स्थापित कंपनियों के शेयर होते हैं।
2. **मिड-कैप फंड:** ये फंड मध्यम आकार की कंपनियों के शेयरों में निवेश करते हैं, जो आमतौर पर तेजी से बढ़ने वाली कंपनियां होती हैं।
3. **स्मॉल-कैप फंड:** ये फंड छोटी कंपनियों के शेयरों में निवेश करते हैं, जो आमतौर पर उच्च जोखिम और उच्च रिटर्न की संभावना के साथ आते हैं।
4. **सेक्टोरल फंड:** ये फंड विशिष्ट क्षेत्रों या उद्योगों में निवेश करते हैं, जैसे कि टेक्नोलॉजी, फार्मास्यूटिकल्स, या ऑटोमोबाइल।

इक्विटी फंड के लाभ

1. **विविधीकरण:** इक्विटी फंड निवेशकों को विविधीकरण का अवसर प्रदान करते हैं, जिससे वे अपने निवेश को विभिन्न शेयरों में फैला सकते हैं।
2. **पेशेवर प्रबंधन:** इक्विटी फंड पेशेवर फंड प्रबंधकों द्वारा प्रबंधित किए जाते हैं, जो निवेशकों के लिए निवेश के निर्णय लेते हैं।
3. **लिक्विडिटी:** इक्विटी फंड निवेशकों को अपने निवेश को आसानी से बेचने और नकदी प्राप्त करने का अवसर प्रदान करते हैं।

इक्विटी फंड के जोखिम

1. **बाजार जोखिम:** इक्विटी फंड शेयर बाजार में निवेश करते हैं, जो बाजार की अस्थिरता के कारण जोखिम भरा हो सकता है।
2. **कंपनी-विशिष्ट जोखिम:** इक्विटी फंड विशिष्ट कंपनियों के शेयरों में निवेश करते हैं, जो कंपनी-विशिष्ट जोखिमों के अधीन हो सकते हैं।
3. **इक्विटी फंड:** निवेशकों के लिए एक अच्छा विकल्प हो सकता है जो शेयर बाजार में निवेश करने के इच्छुक हैं और जोखिम उठाने की क्षमता रखते हैं

करोड़पति बनाने वाली स्कीमों में लोग कर रहे जमकर निवेश, आठ गुणा तक बढ़ा पैसा

सिर्फ 9 साल में छू लिया आसमानी आंकड़ा, 28,265 करोड़ कर डाले निवेश, एसआईपी के जरिए म्यूचुअल फंड में निवेश लगातार बढ़ रहा

अपने पैसे को लोग अलग-अलग स्कीम में निवेश करते हैं। किसी स्कीम में रिटर्न कम मिलता है तो किसी में ज्यादा। वहीं जो लोग जोखिम लेते हैं, वे एसआईपी के जरिए म्यूचुअल फंड में निवेश करते हैं। यह एक ऐसी स्कीम है जिसमें लगातार छोटी रकम के निवेश से ही व्यक्ति करोड़पति बन सकता है। एक नई रिपोर्ट के अनुसार, एसआईपी के जरिए म्यूचुअल फंड में हर महीने जमा होने वाला पैसा पिछले नौ सालों में लगभग आठ गुना बढ़ गया है। व्हाइटओक कैपिटल म्यूचुअल फंड की एक रिपोर्ट बताती है कि अगस्त 2016 में एसआईपी के जरिए कुल 3,497 करोड़ रुपये आए थे। अगस्त 2025 तक ये आंकड़ा बढ़कर 28,265 करोड़ रुपये हो गया है। इससे पता चलता है कि निवेशकों का एसआईपी पर भरोसा बढ़ रहा है। वे इसे पैसे बनाने का एक अच्छा तरीका मान रहे हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि यह लगातार वृद्धि दिखाती है कि एसआईपी में निवेशकों का विश्वास बढ़ रहा है।

कितना रहा रिटर्न : अगस्त 1996 से अगस्त 2025 के बीच एसआईपी से मिलने वाला सबसे ज्यादा रिटर्न 55.6 प्रतिशत रहा। वहीं, सबसे कम रिटर्न -24.6 प्रतिशत रहा। लेकिन अगर औसत रिटर्न की बात करें, तो यह 14-16 प्रतिशत के आसपास रहा। यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपने कितने समय के लिए निवेश किया है।

निवेश का कौन सा समय सही : रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि मार्केट में कब निवेश करना है, यह इतना जरूरी नहीं है जितना कि निवेश करते रहना। अगर आपने मार्केट के टॉप पर भी एसआईपी शुरू की थी, तो भी आपको लंबे समय में अच्छा फायदा हुआ होगा। उदाहरण के लिए, अगर किसी ने जनवरी 2008 में 10,000 रुपये की मंथली एसआईपी शुरू की थी, जो कि ग्लोबल फाइनेंशियल क्राइसिस से ठीक पहले का समय था, तो भी अगस्त 2025 तक उसका 21.2 लाख रुपये का निवेश बढ़कर 75.23 लाख रुपये हो गया होता। इस पर उसे लगभग 13 प्रतिशत का एक्सआईआरआर मिला होता। एक्सआईआरआर एक तरीका है जिससे पता चलता है कि आपके निवेश पर आपको कितना रिटर्न मिला है।

किस कैटेगरी का कितना रिटर्न : दिलचस्प बात यह है कि रिपोर्ट में यह भी पाया गया है कि मिड-कैप एसआईपी ने लॉन्ग टर्म में लार्ज-कैप और स्मॉल-कैप कैटेगरी से बेहतर रिटर्न दिया है। मिड-कैप एसआईपी का एवरेज रिटर्न 17.4 प्रतिशत रहा, जबकि लार्ज-कैप का 13 प्रतिशत और स्मॉल-कैप का 14.7 प्रतिशत रहा।

कोई भी लोन लेने से पहले फायदे और नुकसान को जान लें

फिक्स्ड, फ्लोटिंग या फिर हाइब्रिड होम लोन के लिए कौन-सी ब्याज दर बेहतर, फिक्स्ड रेट वाले लोन तब बेहतर होते जब ब्याज दरें बढ़ रही हों

तैयारी

बिजनेस डेस्क

जब लोन पर घर खरीदने जार रहे हों तो एक बार बैंकों की ब्याज दरों को जांच लें। किसी जानकारी से सलाह ले लें। इससे आपको परेशानी नहीं होगी और आसानी से घर खरीद सकेंगे। अक्सर जब लोग घर खरीदने के लिए होम लोन लेते हैं, तो सबसे बड़ा सवाल यही होता है कि किस तरह का इंटरेस्ट रेट चुना जाए। फिक्स्ड, फ्लोटिंग और हाइब्रिड तीनों विकल्पों के अपने फायदे और नुकसान हैं। सही चुनाव करने से आपकी ईएमआई और लंबे समय की फाइनेंशियल प्लानिंग पर बड़ा असर पड़ता है। इसलिए इस सवाल का जवाब लोन लेने से पहले ही जान लेंगे तो आसानी रहेगी।

फिक्स्ड इंटरेस्ट रेट लोन

- फिक्स्ड रेट में आपकी ईएमआई पूरी लोन अवधि या शुरुआती कुछ साल तक एक जैसी रहती है। इसका फायदा यह है कि ब्याज दरें बढ़ने पर भी आपकी ईएमआई नहीं बदलती। इससे आपको हर महीने का खर्च आसानी से मैनेज करने में मदद मिलती है। हालांकि, इसका नुकसान यह है कि अगर ब्याज दरें घट जाएं तो इसका फायदा आपको नहीं मिलेगा। साथ ही, शुरुआती दरें भी अक्सर फ्लोटिंग से ज्यादा होती हैं। यह विकल्प उन लोगों के लिए बेहतर है, जिन्हें स्थिरता चाहिए और ईएमआई में उतार-चढ़ाव नहीं चाहते।

फ्लोटिंग इंटरेस्ट रेट लोन

- फ्लोटिंग रेट आरबीआई की नीतियों और मार्केट की परिस्थितियों के हिसाब से बदलता है। इसका सबसे बड़ा फायदा यह है कि ब्याज दर घटने पर ईएमआई कम हो जाती है। इससे लंबे समय में यह फिक्स्ड से सस्ता साबित हो सकता है। होम लोन लेने वाले ज्यादातर लोग यही विकल्प चुनते हैं। मार्केट की स्थिति अर्थव्यवस्था में महंगाई और ब्याज दरों की दिशा होम लोन पर सीधा असर डालती है। जब महंगाई बढ़ती है तो बैंक ब्याज दरें ऊपर कर देते हैं ताकि जोखिम कम हो। वहीं स्थिर बाजार में ब्याज दरें अक्सर सस्ती हो जाती हैं। इसलिए टाइमिंग भी अहम फैक्टर है। लेकिन, फ्लोटिंग रेट की अपनी खामियां हैं। अगर ब्याज दर बढ़ जाएं तो **EMI** भी बढ़ जाती है। यह आपका पूरा बजट भी बिगाड़ सकती है। यह विकल्प उन लोगों के लिए ज्यादा सही रहता है, जो लंबे समय तक लोन लेने वाले हैं और ईएमआई में उतार-चढ़ाव सह सकते हैं।

हाइब्रिड इंटरेस्ट रेट लोन

- हाइब्रिड लोन में शुरुआती कुछ सालों तक ईएमआई फिक्स्ड रहती है और उसके बाद यह फ्लोटिंग में बदल जाती है। इस तरह पहले कुछ सालों तक स्थिरता मिलती है और बाद में मार्केट के हिसाब से ब्याज दरें घटने पर फायदा हो सकता है। हालांकि शुरुआती दरें फ्लोटिंग से थोड़ी ज्यादा हो सकती हैं और अगर बाद में ब्याज दरें बढ़ जाएं तो ईएमआई भी बढ़ेगी। यह विकल्प उन लोगों के लिए सही है जो शुरुआत में ईएमआई स्थिर रखना चाहते हैं और आगे चलकर रिस्क लेने को तैयार हैं।

क्या है एक्सपर्ट की राय?

जानकारों का कहना है कि फिक्स्ड रेट वाले लोन तब बेहतर होते हैं जब ब्याज दरें बढ़ रही हों। ये उन लोगों के लिए ठीक हैं जिन्हें स्थिरता चाहिए या लगता है कि दरें आगे और बढ़ेंगी। वहीं, फ्लोटिंग रेट घटती ब्याज दर वाले माहौल में सही रहते हैं। हाइब्रिड होम लोन उन लोगों के लिए होते हैं जो शुरू में कुछ साल तक निश्चित ईएमआई चाहते हैं, लेकिन आगे चलकर बाजार के हिसाब से ब्याज दरों का फायदा उठाना चाहते हैं।लोन की अवधि का असर लोन का टेन्योर जितना लंबा होगा, कुल ब्याज का बोझ उतना ज्यादा होगा। छोटी अवधि का लोन लेने पर ईएमआई थोड़ी बड़ी होगी लेकिन ब्याज की बचत काफी होगी। इसलिए अपनी क्षमता के हिसाब से संतुलित अवधि चुनना बेहतर रहता है।

लोन लेने की लागत स्थिर

अभी की स्थिति देखें तो लोन लेने की लागत स्थिर हो रही है। आरबीआई की ओर से रेपो रेट में हालिया कटौतियों से ग्राहकों का भरोसा भी बढ़ा है। इस समय फ्लोटिंग रेट होम लोन की ब्याज दर अपेक्षाकृत कम हैं। इसलिए यह उन लोगों के लिए अच्छा विकल्प है जो कुल ब्याज खर्च घटाना चाहते हैं।'होमबायर्स को आखिरी फैसला लेने से पहले कुछ बातों पर जरूर विचार करना चाहिए। जैसे कि अभी अलग-अलग लोन ऑप्शन पर ब्याज दर में कितना फर्क है और लोन अवधि कितनी लंबी है। अगर लोन लंबे समय के लिए है तो फ्लोटिंग रेट से फायदा हो सकता है, क्योंकि आगे चलकर अगर दरें घटती हैं तो कुल ब्याज का बोझ कम होगा।

ऐसे कर सकते हैं प्लानिंग

- **1. वित्तीय स्थिति का मूल्यांकन :** अपनी वित्तीय स्थिति का मूल्यांकन करें और देखें कि आप कितना होम लोन ले सकते हैं। अपनी आय, व्यय, और बचत को ध्यान में रखें।
- **2. होम लोन की आवश्यकता :** अपने होम लोन की आवश्यकता को निर्धारित करें। आपको कितनी राशि की आवश्यकता है? आप कितने समय में लोन चुकाना चाहते हैं?
- **3. ब्याज दरें और शर्तें :** विभिन्न बैंकों और वित्तीय संस्थानों की ब्याज दरें और शर्तें तुलना करें। सबसे अच्छा विकल्प चुनें जो आपकी आवश्यकताओं को पूरा करता है।
- **4. लोन की अवधि :** लोन की अवधि का चयन करें जो आपकी वित्तीय स्थिति के अनुसार उपयुक्त हो। लंबी अवधि के लोन में मासिक किस्त कम होती है, लेकिन कुल ब्याज अधिक होता है।
- **5. प्रोसेसिंग फीस और अन्य शुल्क :** प्रोसेसिंग फीस और अन्य शुल्कों को ध्यान में रखें। ये शुल्क आपके लोन की कुल लागत को बढ़ा सकते हैं।
- **6. क्रेडिट स्कोर :** अपने क्रेडिट स्कोर को जांचें और सुनिश्चित करें कि यह अच्छा है। एक अच्छा क्रेडिट स्कोर आपको बेहतर ब्याज दरों और शर्तों के लिए योग्य बना सकता है।
- **7. विकल्पों की तुलना :** विभिन्न होम लोन विकल्पों की तुलना करें और सबसे अच्छा विकल्प चुनें जो आपकी आवश्यकताओं को पूरा करता है।
- **8. वित्तीय सलाहकार से परामर्श :** यदि आवश्यक हो, तो वित्तीय सलाहकार से परामर्श लें। वे आपको होम लोन के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान कर सकते हैं और आपको सबसे अच्छा विकल्प चुनने में मदद कर सकते हैं।

पांच लाख की रकम को कैसे करें निवेश कि मिले बढ़िया मुनाफा

अक्सर ज्यादा रिटर्न देने वाले विकल्पों की तलाश में रहते हैं निवेशक

प्लानिंग

बिजनेस डेस्क

अगर आपके पास 5 लाख रुपये हैं और आप इन्हें निवेश करना चाहते हैं तो यह रिपोर्ट आपके लिए बेहतर हो सकती है। देखने में आया है कि भारतीय निवेशक हमेशा सुरक्षित और ज़्यादा रिटर्न देने वाले निवेश विकल्पों की तलाश में रहते हैं। अगर आप भी अपनी एकमुश्त रकम को निवेश करना चाहते हैं और इसके लिए बेहतर ऑप्शन की तलाश में हैं एक बार जरूर देखें की आपके लिए पोस्ट ऑफिस की सकीम बेहतर रहेगी, बैंक की एफडी या फिर डेट फंड इनमें से कहा आपको ज्यादा मुनाफा मिल सकता है। निवेश का चुनाव हमेशा व्यक्ति की फाइनेंशियल कंडीशन, गोल्स और रिस्क सहने की क्षमता पर निर्भर करता है। ऐसे में जब 5 लाख या 10 लाख रुपये के एकमुश्त निवेश की बात आती है तो लोगों के लिए सही विकल्प चुनना और जरूरी हो जाता है क्योंकि इतनी बड़ी रकम को ऐसे ही कहीं भी निवेश नहीं किया जा सकता। ऐसे में बैंक की तरह पोस्ट ऑफिस एफडी भी वर्षों से सुरक्षित और विश्वसनीय निवेश ऑप्शन रही है। वहीं, हाल के वर्षों में डेट फंड भी एक लोकप्रिय ऑप्शन के तौर पर उभर रहा है। लोग इसे एफडी से बेहतर रिटर्न देने वाला ऑप्शन मानते हैं। आइए समझते हैं कि अगर 5 लाख रुपये का निवेश कहां ज्यादा मुनाफा दे सकता है।

एकमुश्त निवेश के लिए सही विकल्प चुनना बेहद जरूरी

पोस्ट ऑफिस एफडी भी वर्षों से सुरक्षित और विश्वसनीय निवेश ऑप्शन रही

अब हाल के वर्षों में डेट फंड भी लोकप्रिय ऑप्शन के तौर पर उभरा

पोस्ट ऑफिस फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) की खासियत

- **सुरक्षा:** ये सबसे सुरक्षित निवेश विकल्पों में से एक है क्योंकि ये सरकार द्वारा समर्थित है.
- **निश्चित रिटर्न:** आपको निवेश की शुरुआत में ही ब्याज दर पता चल जाती है, जिससे रिटर्न का अनुमान लगाना आसान हो जाता है।
- **लॉक-इन अवधि:** तमाम टेन्योर के लिए उपलब्ध है, जैसे 1, 2, 3 और 5 साल।
- **रेगुलर ब्याज भुगतान:** आप मासिक, त्रैमासिक या वार्षिक आधार पर ब्याज प्राप्त करना चुन सकते हैं।

5 लाख के निवेश पर कितना होगा मुनाफा

- मान लीजिए कि आप पोस्ट ऑफिस की 5 साल की एफडी में निवेश कर रहे हैं। इस एफडी पर मौजूदा समय में 7.5% ब्याज मिल रहा है। अगर आप 5 लाख रुपये 5 साल के लिए निवेश करते हैं तो आपको 5 साल में 2,24,974 ब्याज मिलेगा और कुल मिलाकर 7,24,974 रुपये मिलेंगे।

डेट फंड की खासियत

- डेट फंड म्यूचुअल फंड की ही एक कैटेगरी है। इसमें खासतौर पर फिक्स्ड-इनकम सिक्योरिटीज जैसे सरकारी बॉन्ड, कॉर्पोरेट बॉन्ड, डिबेंचर, कमर्शियल पेपर और ट्रेजरी बिल में निवेश किया जाता है। इसका रिटर्न मार्केट बेस्ड होता है।
- **डायवर्सिफिकेशन:** डेट फंड तमाम तरह के हैं जैसे- लिक्विड फंड, अल्ट्रा-शॉर्ट ड्यूरेशन फंड, शॉर्ट ड्यूरेशन फंड, मीडियम ड्यूरेशन फंड और लॉन्ग ड्यूरेशन फंड, ऐसे में आपको डायवर्सिफिकेशन का मौका मिल जाता है।
- **लिक्विडिटी:** ये एफडी की तुलना में ज़्यादा लिक्विड होते हैं, क्योंकि आप अपनी यूनिट्स को किसी भी वर्किंग डे पर बेच सकते हैं (कुछ फंडों में एग्जिट लोड हो सकता है)।
- **प्रोफेशनल मैनेजमेंट :** फंड मैनेजर आपके पैसे का प्रबंधन करते हैं, जो बाज़ार की स्थितियों के आधार पर निवेश का फैसला लेते हैं।

5 लाख के निवेश पर रिटर्न

- डेट फंड का रिटर्न प्रदर्शन पर आधारित होता है और फ्यूचर में बदल सकता है। औसतन, कई डेट फंडों ने पिछले कुछ साल में 6-9% का रिटर्न दिया है। मान लीजिए आप 5 लाख रुपये 5 साल के लिए इसमें निवेश करते हैं और उस पर 9% का रिटर्न मिल रहा है तो 2,69,311 रुपये ब्याज के तौर पर मिलेंगे। इस तरह आपको कुल 5,00,000+2,69,312 = 7,69,312 रुपये मिलेंगे। हालांकि ये उदाहरण केवल अनुमानित है, वास्तविक रिटर्न फंड के प्रदर्शन पर निर्भर करेगा।

कौन सा विकल्प चुनें?

ये चुनाव आपकी व्यक्तिगत ज़रूरतों पर निर्भर करता है-जैसे जोखिम उठाने की क्षमता, अगर आप बिलकुल भी जोखिम नहीं लेना चाहते और अपनी पूंजी की 100% सुरक्षा चाहते हैं, तो पोस्ट ऑफिस एफडी आपके लिए बेहतर है। अगर आप थोड़ा जोखिम ले सकते हैं और एफडी से ज़्यादा रिटर्न चाहते हैं, तो डेट फंड एक अच्छा विकल्प है।

निवेश की अवधि

छोटी अवधि (3 साल से कम) के लिए, पोस्ट ऑफिस एफडी या शॉर्ट-ड्यूरेशन डेट फंड को देखा जा सकता है. लंबी अवधि (3 साल से ज़्यादा) के लिए, इंडेक्सेशन लाभ के कारण डेट फंड टैक्स के लिहाज से ज़्यादा कुशल और बेहतर रिटर्न दे सकता है।

खबर संक्षेप

एआईकेकेएमएस ने मांगों को लेकर की बैठक

तोशाम। ऑल इंडिया किसान खेत मजदूर संगठन जिला कमेटी भिवानी ने शनिवार को पंचायत घर तोशाम में कामरेड सुखबीर की अध्यक्षता में एक बैठक आयोजित की। जिसमें हरियाणा सरकार द्वारा भारी बारिश व बाढ़ से प्रभावित हुए किसानों और अन्य लोगों के लिए जो सहायता राशि की सरकार ने घोषणा की है उसे नाकाफ़ी बताते हुए गांव व खेतों में भरे पानी की निकासी युद्धस्तर पर काम जारी करने तथा किसानों को व मजदूरों का का जो नुकसान हुआ है उसके पूर्ण नुकसान की भरपाई करने की मांग की। इस मौके पर एसयूसीआई कम्युनिस्ट पार्टी के राज्य सचिव कॉमरेड राजेन्द्र सिंह भी मौजूद रहे।

त्रिवेणी में होता है पित्रों व देवी देवताओं का निवास

लोहारू। त्रिवेणी बाबा ने कहा कि श्राद्ध पक्ष में त्रिवेणी यानी बड़, पीपल और नीम के पौधे एक साथ लगाना बहुत फलदायक है क्योंकि त्रिवेणी में सभी देवी-देवताओं व पितरों का वास होता है। वे शनिवार को पितृजनों की याद में जगह जगह त्रिवेणी लगाने का आह्वान कर रहे हैं। त्रिवेणी बाबा ने गांव झुंपा कलां में पर्यावरण प्रेमी सेवानिवृत्त जिला शिक्षा अधीक्षक दर्शनानंद नेहरा की पूजनीय माता स्व. श्रीमती शरबती देवी के श्राद्ध के अवसर पर त्रिवेणी रोपित कर रहे थे। इस अवसर सरपंच प्रतिनिधि मीरसिंह, रामकिशन कालीरावणा, ईश्वर सिंह श्योराण, रामसिंह नेहरा, महेंद्र श्योराण, उमेद श्योराण, अधिवक्ता करणसिंह नेहरा, पवन नेहरा, संतोष देवी आदि उपस्थित रहे ।

डोभी तालाब सौंदर्यकरण की घोषणा बनी दिखावा

भिवानी। डोभी तालाब के सौंदर्यकरण को लेकर प्रशासन ने जिन वादों के साथ घोषणा की थी, वह आज एक साल बाद भी केवल कागजी साबित होते नजर आ रहे हैं। ये बात हरियाणा कांग्रेस उद्योग सैल के चेयरमैन अशोक बुवानीवाला ने आज स्थानीय डोभी तालाब क्षेत्र का मुआयना करते हुए उपस्थित मीडिया के समक्ष कहें। उन्होंने कहा कि तालाब की सूरत बदलने, उसे पर्यटन स्थल का रूप देने और स्थानीय लोगों के लिए मनोरंजन व स्वच्छता का केंद्र बनाने के नाम पर किए गए वादों का आज तक कोई अता-पता नहीं है। नतीजा यह है कि प्रशासन की लापरवाही से डोभी तालाब गंदगी, आवारा पशुओं, मच्छरों व गंदगी से फैली बिमारियों का अड्डा बन चुका है। बुवानीवाला ने कहा कि भाजपा सरकार ने बीते वर्ष बड़े-बड़े दावे किए गए थे कि डोभी तालाब व अन्य तालाबों के चारों ओर पैदल पथ बनेगा, पार्किंग व्यवस्था होगी।

जाट आंदोलन के शहीदों को दी श्रद्धांजलि

लोहारू। शहीद महाबीर किसान भवन में शनिवार को जाट आरक्षण संघर्ष समिति की ओर से मैयड़ में जाट आंदोलन के दौरान शहीद हुए सुनील श्योराण सहित आंदोलन में शहीद हुए सभी किसानों को श्रद्धासुमन अर्पित कर श्रद्धांजलि दी गई। मौजूद लोगों ने शहीद सुनील श्योराण समेत आंदोलन के दौरान शहादत देने वाले 21 शहीदों को पुष्प अर्पित कर नमन किया।

सीबीएलयू में पहले पुस्तक मेले का आयोजन

विश्वविद्यालय का शैक्षणिक माहौल होगा समृद्ध: प्रो. सुनीता

पुस्तक मेले में कई प्रमुख प्रकाशकों ने सीबीएलयू छात्रों को संपादन में इंटर्नशिप प्रदान करने में रुचि दिखाई

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

भिवानी। पुस्तक मेले का अवलोकन करते हुए। फोटो: हरिभूमि

चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय (सीबीएलयू), भिवानी ने 10-11 सितंबर को कुलगुरु दीप्ति धर्माणी की अध्यक्षता एवं कुलसचिव डॉ भावना शर्मा के मार्गदर्शन में पहले पुस्तक मेले का आयोजन किया, जो संस्थान के लिए एक महत्वपूर्ण शैक्षणिक मील का पत्थर है। इस पुस्तक मेले का उद्घाटन कुलगुरु प्रो. दीप्ति धर्माणी ने किया, जिन्होंने ज्ञान, आलोचनात्मक सोच और व्यक्तिगत विकास में पुस्तकों की भूमिका पर जोर दिया।

पुस्तक मेले में कई प्रमुख प्रकाशकों ने सीबीएलयू छात्रों को संपादन में इंटर्नशिप प्रदान करने में रुचि दिखाई, जिससे व्यावहारिक सीखने और कैरियर विकास के नए अवसर खुल गए। विभिन्न विभागों के संकाय सदस्यों ने विश्वविद्यालय पुस्तकालय के लिए पुस्तकें चुनीं, जिससे इसके शैक्षणिक संसाधनों में वृद्धि हुई। छात्रों ने पुस्तक मेले को विविध अध्ययन सामग्री तक पहुंचने और पढ़ने की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए एक मूल्यवान मंच के रूप में सराहा। प्रो. सुनीता भरतवाल ने सभी योगदानकर्ताओं को धन्यवाद दिया और जल्द ही नए चयनित पुस्तकों को प्रदान करने की प्रतिबद्धता जताई। पुस्तक मेले के समापन पर, प्रो. सुनीता भरतवाल ने ऐसे समृद्ध शैक्षणिक आयोजनों के आयोजन की निरंतरता का आश्वासन दिया। पुस्तक मेला न केवल विश्वविद्यालय के शैक्षणिक वातावरण को समृद्ध करता है, बल्कि ज्ञान, प्रेरणा और अवसर के साधनों के रूप में पुस्तकों की स्थायी प्रासंगिकता को भी रेखांकित करता है।

30 से अधिक प्रतिष्ठित प्रकाशकों ने लिया भाग

पुस्तक मेले में 30 से अधिक प्रतिष्ठित प्रकाशकों और पुस्तक विक्रेताओं ने भाग लिया, जिन्होंने विज्ञान, प्रौद्योगिकी, प्रबंधन, साहित्य, इतिहास और शिक्षा सहित विभिन्न विषयों पर पुस्तकों का प्रदर्शन किया। छात्रों ने शोध, प्रतियोगी परीक्षाओं और उच्च शिक्षा से संबंधित पुस्तकों में विशेष रुचि दिखाई।

भाजपा की बैठक में कार्यकर्ताओं को सौंपी गई जिम्मेदारी

भिवानी। लोहारू विधानसभा क्षेत्र के चारों मंडलों के भाजपा पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं की महत्वपूर्ण बैठक शनिवार को बहल के विनायक रिसॉर्ट, राजगढ़ रोड पर आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता भाजपा जिला अध्यक्ष विरेंद्र कौशिक ने की।

बैठक की शुरुआत मां सरस्वती के सामने दीप प्रज्ज्वलित करने से हुई। बैठक में आगामी कार्यक्रम सेवा पखवाड़ा 17 सितंबर से 2 अक्टूबर को लेकर विस्तारपूर्वक चर्चा की गई। जिला अध्यक्ष विरेन्द्र कौशिक ने कहा कि सेवा पखवाड़ा केवल भाजपा का कार्यक्रम नहीं, बल्कि समाज के जरूरतमंद, वंचित और कमजोर वर्ग तक सेवा की भावना पहुंचाने का संकल्प है। उन्होंने मंडल स्तर पर जिम्मेदारियां सौंपते हुए कहा कि हर कार्यकर्ता निष्ठा से अपनी भूमिका निभाए और भाजपा का सच्चा सिपाही होने का उदाहरण प्रस्तुत करे। इस अवसर पर जिला महामंत्री रमेश पचेरवाल, रेखा राघव, जिला उपाध्यक्ष सुनील शर्मा, ढिगावा मंडल प्रधान मुरारीलाल शर्मा, पूर्व सरपंच गजानंद अग्रवाल, प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य रवि महमिया, डॉ. सुमन श्योराण, जिला सचिव डॉ. विजेंद्र कस्वां, सिवानी प्रभारी टोनी बराला, दिनेश मान आदि मौजूद रहे।

गांव सागवान में जलभराव की समस्या

मदद करने प्रशासन के साथ आगे आए ग्रामीण और विभिन्न संगठन

भिवानी। गांव में ट्रैक्टर पम्पसेटों के लिए डीजल दिए जाने की घोषणा करते हुए। फोटो: हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

तोशाम क्षेत्र के बाढ़ पीड़ित गांव सागवान में जल भराव निकासी के लिए प्रशासन के अलावा सामाजिक संगठन किसान सभा, युवा कल्याण संगठन व आस-पास के ग्रामीणों विशेषकर मिराण ने मदद के लिए हाथ आगे बढ़ाए।

अखिल भारतीय किसान सभा मिराण एकाई तथा ग्रामीणों ने गांव में सहयोग एकत्रित करके नरेंद्र सिहाग के नेतृत्व में एक टीम ने जलभराव निकासी के लिए सागवान को 2 हजार लीटर डीजल गांव सरपंच बलजीत सिंह को सुपुर्द किया। इस अवसर पर किसान सभा के जिला प्रधान रामफल देशवाल, भारतीय किसान यूनियन के नेता सोनू मालपुरिया और उनकी टीम उपस्थित रही। इस अवसर पर किसान सभा के जिला उपप्रधान व माकपा नेता कामरेड ओमप्रकाश ने कहा कि वह और उनके संगठन व पार्टी सागवान व अन्य जल भराव पीड़ित प्रभावित गांव की इस संकट की घड़ी में हरसंभव मदद कर रहे हैं तथा अपने स्तर पर डीजल के लिए 50 हजार रुपये की मदद करेंगे। उधर युवा कल्याण संगठन के संरक्षक कमल प्रधान भी गांव में लगातार मदद पहुंचाने के लिए अपने संगठन की तरफ से काम कर रहे है तथा गांव में मैडिकल दवाईयां भिजवा रहे है।

विशेष गिरदावरी करवाएं

गांव में भरे हुए पानी को शीघ्र निकाला जाए तथा बर्बाद फसलों व ध्वस्त घरों की विशेष गिरदावरी करवाकर न्यायोचित मुआवजा दिलाया जाए। गांव में संभावित बीमारी फैलने पर रोक लगाते हुए मैडिकल कैंप लगाए जाएं।

किसान सभा ने जिला प्रशासन से अपील की है कि वे भिवानी-घग्गर ड्रेन का पानी निगाणा फीडर में डाला जाए तथा सागवान की तरफ पानी जाने वाले तीन मोगों को रोका जाए। गांव में मच्छर मारने के लिए फोगिंग की जाए, पीने के पानी व पशुओं के चारे की व्यवस्था की जाए।

कला को जीवित रखना बड़ा कार्य : शिवरतन

कवि सम्मेलन में रचनाओं के माध्यम से बुराइयों पर कंसा तंज

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

भिवानी। बाहर से आए कवियों को सम्मानित करते हुए। फोटो: हरिभूमि

हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में वैश्य महाविद्यालय भिवानी के हिंदी विभाग एवं साहित्य सुरभि प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वावधान में भव्य कवि सम्मेलन का आयोजन वैश्य महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ संजय गोयल, हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ अनिल तंवर एवं आयोजक सचिव डॉ कामना कौशिक की देखरेख में महाविद्यालय के सभागार में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से वैश्य महाविद्यालय ट्रस्ट के प्रधान एडवोकेट शिवरतन गुप्ता,वैश्य महाविद्यालय प्रबंधक समिति के कोषाध्यक्ष बृजलाल सर्राफ,ट्रस्टी विजयकिशन अग्रवाल,प्राचार्य डॉ संजय गोयल एवं कार्यक्रम संयोजक हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ अनिल तंवर ने शिरकत की। कवि सम्मेलन में सुप्रसिद्ध कवियों विजेंद्र गाफिल,प्रो. रश्मि बजाज,प्रो. श्याम वशिष्ठ, विकास यशकीर्ति एवं डॉ. हरिकेश पंघाल ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समा बांध दिया। कवि सम्मेलन का शुभारंभ मां सरस्वती के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्वलित करते हुए अतिथियों द्वारा किया गया। अपने स्वागतीय उद्बोधन में अतिथियों का स्वागत करते हुए प्राचार्य डॉ संजय गोयल ने कहा कि इस तरह के आयोजन से विद्यार्थियों को अपने जीवन के विभिन्न शिक्षाप्रद बारीकियों से रूबरू होने का अवसर कवियों के माध्यम से मिलता हैं क्योंकि एक साहित्यकार ही शौर्य को जीवंत रख सकता है। वैश्य महाविद्यालय ट्रस्ट के प्रधान एडवोकेट शिवरतन गुप्ता ने कहा कि आधुनिकता के युग में कला को जीवित रखना बड़ा कार्य है। वह कार्य कविगण बखूबी निभा रहें हैं

मोहब्बत की निशानी

कवि प्रोफेसर श्याम वशिष्ठ ने जिंदगी के अहम रिश्तों पर आधारित अपनी गजल मोहब्बत की निशानी को यहां पर कौन देखेगा, बुजुर्गों की कहानी को यहां पर कौन देखेगा, तेरी आंखों का दीवाना हुआ है यह सारा जहां, मेरी आंखों के पानी की यहां पर कौन देखेगा गाते हुए खूब वाह वाही लुटी। कवि डॉ हरिकेश पंघाल ने अपनी रचना पहला सुख निरोगी काया के माध्यम से मानव जीवन का बेहतरीन चित्रण प्रस्तुत किया। उन्होंने हरियाणवी कविता चिचड़ के माध्यम आज के युग में भ्रष्टाचार के दलदल में फंसे मनुष्य का वर्णन करते हुए भ्रष्टाचार पर कड़ा प्रहार किया।

हमें उनके शब्दों से ज्ञानार्जित करना चाहिए क्योंकि उनके पास जान का भंडार होता है।

प्राथमिक चिकित्सा सिर्फ कौशल नहीं बल्कि एक जीवन रक्षक आदत: सचिव

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

विश्व प्राथमिक सहायता दिवस पर बताया प्राथमिक चिकित्सा व पर्यावरण संरक्षण का महत्व

उपायुक्त एवं अध्यक्ष साहिल गुप्ता के कुशल मार्गदर्शन में रेडक्रॉस भवन में विश्व प्राथमिक सहायता दिवस बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। इस साल का विषय फस्ट एड एंड क्लाइमेट चेंज था, जिसका मुख्य उद्देश्य जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न होने वाली आपदाओं, जैसे बाढ़, लू और जंगल की आग, के दौरान प्राथमिक चिकित्सा की तैयारियों पर जोर देना था।

इस अवसर पर बड़ी संख्या में युवाओं ने भाग लिया और पर्यावरण को स्वच्छ बनाने का संदेश दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता रेडक्रॉस के सचिव प्रदीप कुमार ने की, जिन्होंने प्राथमिक चिकित्सा के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा प्राथमिक चिकित्सा सिर्फ एक कौशल नहीं, बल्कि एक जीवन रक्षक आदत है। यह हमें आपात स्थिति में सही समय पर सही कदम उठाने में मदद करती है, खासकर तब जब जलवायु परिवर्तन से जुड़ी आपदाएं बढ़ रही हैं। सचिव प्रदीप कुमार ने कहा कि इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ रेडक्रॉस एंड रेड क्रिसेंट सोसाइटीज (आईएफआरसी) द्वारा वर्ष 2000 में शुरू किया गया यह दिवस हर साल सितंबर के दूसरे शनिवार को मनाया जाता है। इसका मकसद लोगों में प्राथमिक चिकित्सा के महत्व और उसके जीवन-रक्षक कौशल के बारे में जागरूकता बढ़ाना है। कार्यक्रम के अंत में, सभी प्रतिभागियों ने मिलकर पर्यावरण को स्वच्छ रखने और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने के लिए काम करने का प्रण लिया।

अपने कार्यस्थल की सफाई रखें

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

भिवानी। कार्यस्थल के भवन की छत की सफाई करते हुए।

जिला उपायुक्त मुनीष नागपाल के निर्देशानुसार विभिन्न विभागों में कार्यरत अधिकारियों व कर्मियों द्वारा अपने अपने कार्यस्थल व आसपास के क्षेत्र में सफाई को बढाने के लिए अभियान का संचालन किया गया। इसके तहत उन्होंने अपने कार्यालयों की सफाई की व कूडा कर्कट को एकत्रित कर डस्टबीन के हवाले किया। इसी कडी में खंड विकास पंचायत अधिकारी कार्यालय में अधिकारी अंकित मेहता के मार्गदर्शन में स्वच्छता अभियान चला। कार्यवाहक समाज शिक्षा एवं पंचायत अधिकारी विकास राणा व अन्य कर्मी साथियों द्वारा कार्यालय की छत सहित अन्य जगहों की सफाई की।

वहां उगे हुए फालतू घासफूस को साफ किया, परिसर को सुथरा बनाने के लिए सभी से सहयोग का आहवान किया। खंड विकास पंचायत अधिकारी अंकित मेहता ने कहा कि सभी का प्रयास होना चाहिए कि अपने कार्यालयों की देखभाल भी अपने निवास स्थानों की भांति करने की कोशिश करे, हमारा जरा सा सहयोग इनकी सुंदरता को बढाने में सहयोगी बनेगा। विकास राणा ने कहा कि स्वच्छता के जरिए हम अनेक तरह के रोगों से बच सकते है, अपने भवनों की रख रखाव में मदद इनके जरिए मिलती है जिससे कि उनकी आयु बढ जाती है। मौके पर प्रीतम, जोगेंद्र आदि का सहयोग रहा।

छात्रों ने भाषा की महत्ता, उसकी समृद्धि और गौरव को दर्शाती कविताएँ प्रस्तुत कीं

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बवानीखेड़ा

हिंदी दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में बच्चों को सम्मानित करते हुए।

आनंद स्कूल फॉर एक्सीलेंस के प्रार्थना सभागार में हिंदी दिवस बड़े उत्साह और गरिमामय वातावरण में मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विद्यालय के चेयरमैन आनंद यादव रहे, जिन्होंने दीप प्रज्वलित कर समारोह का शुभारंभ किया। इस अवसर पर विद्यालय के नन्हे-मुन्ने बच्चों से लेकर वरिष्ठ कक्षाओं तक के विद्यार्थियों ने विविध सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दीं। स्वागत गीत, कविता पाठ और नाटक जैसे कार्यक्रमों ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। बच्चों के आत्मविश्वास और मंच पर उनकी प्रस्तुति की सभी ने सराहना की। समारोह के अंतर्गत विशेष रूप से कविता प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें बच्चों ने हिंदी भाषा की महत्ता, उसकी समृद्धि और गौरव को दर्शाती कविताएँ प्रस्तुत कीं। प्रतियोगिता में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को मुख्य अतिथि आनंद यादव द्वारा प्रमाण पत्र प्रदान किए गए।

हिंदी राष्ट्र को जोड़ने वाली भाषा

कार्यक्रम में विद्यालय के निदेशक साहिल यादव, प्रिंसिपल नितीश मिश्र, मंजुलता, स्वीटी और ममता ने अपने-अपने विचार व्यक्त करते हुए बच्चों को हिंदी दिवस की शुभकामनाएँ दीं। उन्होंने कहा कि हिंदी हमारी मातृभाषा ही नहीं, बल्कि हमारी पहचान और संस्कृति की धरोहर है। हमें हिंदी भाषा पर गर्व होना चाहिए और इसे सम्मानपूर्वक अपनाना चाहिए। प्रिंसिपल नितीश मिश्र ने कहा कि हिंदी राष्ट्र को जोड़ने वाली भाषा है और विद्यार्थियों को इसका अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए। चेयरमैन आनंद यादव ने बच्चों को प्रेरित करते हुए कहा कि हिंदी भाषा के माध्यम से हम अपनी परंपराओं और संस्कारों को जीवित रख सकते हैं।

हेल्थ पखवाड़ा मनाया

बच्चों के दांत जांचे और मुंह की बीमारियों की जानकारी दी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

सरकार के निर्देश पर व सिविल सर्जन डॉ रघुवीर शांडिल्य के आदेशानुसार शनिवार को गांव धारेड़ू के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में मुख स्वास्थ्य जागरूकता अभियान के तहत ओरल हैल्थ पखवाड़ा मनाया गया। इस अवसर पर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मानहेरु की टीम द्वारा स्कूल के बच्चों के दातों की जांच की गई तथा उन्हें मुंह की अन्य बिमारियों के बारे में जागरूक किया। दंत चिकित्सक डॉ शशि रंगा ने बताया कि सरकार द्वारा लोगों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने के लिए ये पखवाड़ा मनाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य विभाग लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए प्रयासरत है। इसके लिए लोगों को उनके घर द्वार के नजदीक ही स्वास्थ्य जांच शिविर लगाए जा रहे हैं। स्वास्थ्य शिविरों में लोगों के स्वास्थ्य की जांच की जा रही है और दवाइयां दी जा रही है। सभी आंगनबाड़ी केंद्र, स्कूल एवं आयुष्मान आरोग्य मंदिर पर कैंप लगाकर लोगों को जागरूक किया जा रहा है। चिकित्सकों द्वारा बच्चों एवं लोगों के स्वास्थ्य की जांच की जा रही है।

इस अवसर पर पेटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें बच्चों ने अति सुंदर पेटिंग बनाई। पुरस्कार के तौर पर विभाग की तरफ से टुथपेस्ट तथा टुथब्रुश वितरित किए गए।

दूसरे दलों के कार्यकर्ताओं ने जजपा की सदस्यता ग्रहण की

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बाढड़ा

गांव कारी धारणी में एक दर्जन परिवारों ने भाजपा, कांग्रेस छोडक़र जजपा ज्वाइन की। पूर्व विधायक नैना सिंह चौटाला जी की मौजूदगी में हल्का अध्यक्ष विजय श्योराण काकड़ोली के नेतृत्व में व युवा नेता संदीप धारणी की अध्यक्षता में दर्जनभर से अधिक परिवारों ने जजपा में शामिल होने की घोषणा की।

पूर्व विधायक नैना चौटाला ने हल्के के आधा दर्जन गांवों में पहुंचकर लोगों के सुख-दुख में शामिल हुई व कार्यकर्ताओं का हाल चाल जाना। इस दौरान कारी धारणी गांव में पूर्व सूबेदार महिपाल स्वामी, सुरेश स्वामी, राजू दलाल, जोगिंदर दलाल, सुमित दलाल, जयप्रकाश दलाल, जगदीश दलाल, विजय सांगवान, शिव शंकर जांगड़ा, सुनील दलाल, अजय स्वामी, कृष्ण स्वामी, शेर सिंह दलाल, पप्पू मिस्त्री इत्यादि ने भाजपा, कांग्रेस व अन्य दल छोडक़र जजपा में शामिल होने की घोषणा की। पूर्व विधायक नैना सिंह चौटाला ने कहा कि पार्टी में शामिल होने वाले सभी को पूरा मान-स मान दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि प्रदेश में दिन प्रतिदिन पार्टी का ग्राफ बढ़ता जा रहा है। भाजपा जजपा सरकार में स्त्रियों कों राशन डिपो में ग्रामीण दौरे में उनके साथ जजपा किसान प्रकोष्ठ प्रदेश अध्यक्ष नरेश द्वारका, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य सज्जन बलाली, जिलाध्यक्ष रविंद्र सांगवान चरखी, जिला प्रभारी ऋषिपाल उमरवास, हल्का अध्यक्ष विजय श्योराण काकडोली, हल्का अध्यक्ष राकेश कलकल आदि उपस्थित रहे।

लोगों को अपनी संस्कृति और परंपराओं से जोड़ते है भागवत कथा जैसे आयोजन

श्रीकृष्ण और रूकमणी के विवाह का प्रसंग सुनाया

श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं का किया बखान

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

भिवानी। भागवत कथा में उपस्थित महिलाएं। फोटो: हरिभूमि

कीर्ति नगर के मंगेज भवन में इन दिनों शिव शक्ति सनातन धर्म चैरिटेबल ट्रस्ट (रजि.) द्वारा आयोजित संगीतमय श्रीमद्भागवत कथा ने पूरे क्षेत्र को भक्ति और अध्यात्म के रंग में रंग दिया है। इस भव्य आयोजन में श्रद्धालु भाग ले रहे हैं, जिससे यहां का माहौल पूरी तरह से धार्मिक हो गया है। कथा के सातवें दिन शनिवार को कथावाचक पंडित ऋषि राम वशिष्ठ ने श्रीकृष्ण और रूकमणी के विवाह का मार्मिक प्रसंग सुनाया। उनकी मधुर वाणी और सरस कथा शैली ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस दौरान श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं और उनके जीवन से जुड़ी सुंदर झांकियां भी निकाली गईं, जिन्हें देखकर उपस्थित श्रद्धालु भावविभोर हो गए। इन झांकियों ने कथा को और भी जीवंत बना दिया। जिसमें सोनिका, मानसी व रिया राधा-कृष्ण बने। उन्होंने कहा कि भागवत कथा केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं है, बल्कि यह जीवन में नैतिक मूल्यों और सद्भाव को स्थापित करने का एक सशक्त माध्यम है। इसका उद्देश्य लोगों को अपनी संस्कृति और परंपराओं से जोडऩा है। ट्रस्ट के प्रधान प्रदीप कुमार (सोनू) और आयोजक चंदा गुप्ता ने बताया कि इस आयोजन का मुख्य लक्ष्य समाज में धर्म के प्रति आस्था को बढ़ावा देना और लोगों को सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करना है। उन्होंने बताया कि कथा का समापन 13 सितंबर को भंडारे और प्रसाद वितरण के साथ होगा।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर धर्मबीर नेहरा, सुखबीर, ज्योति, कृष्ण चांदना, कंचन चांदना, हर्षदीप डुडेजा, सुमिता डुडेजा, मुन्नी, शशी लता, माया देवी, मोती, सुनीता तंवर, हैप्पी, मनोज कुमार, त्रिलोक मेहता, माया मुदगिल, शशि परमार, रामअवतार पाराशर, आह्लावन्ति, मंजीत प्रजापत, सतीश सांवरिया, आह्लावंती, मंजीत तंवर, सुनीता तंवर, बिमला परमार, कमलेश, सुदेश दलाल, नीमा देवी, संजय शास्त्री, राजेश गुप्ता, सुरेश शर्मा, सूबेदार नाहर सिंह, अंजू सहित अनेक श्रद्धालुगण मौजूद रहे।

खबर संक्षेप

सम्मान दिवस को लेकर दिखाई दिया उत्साह

चरखी दादरी। पूर्व उप प्रधानमंत्री स्वर्गीय चौधरी देवीलाल की जयंती अवसर पर आगामी 25 सितंबर को रोहतक की नई अनाज मंडी परिसर में इसे सम्मान दिवस के रूप में इंडियन नेशनल लोकदल द्वारा मनाया जाएगा। इस बड़े कार्यक्रम को लेकर सभी में उत्साह का माहौल है। कार्यक्रम के बारे अधिक से अधिक नागरिकों तक जानकारी पहुंचाने के लिए इनेलों के नेताओं द्वारा लगातार पूरे क्षेत्र के ग्रामीण, कस्बाई व शहरी क्षेत्रों में जन संपर्क किया जा रहा है। इसी कड़ी में इनेलो के वरिष्ठ नेता पूर्व चेयरमैन जगबीर सिंह डोहकी ने फतेहगढ, साहुवास व चरखी में जनसंपर्क किया। सभी को अधिक से अधिक पहुंचने का न्योता दिया। उन्होंने बताया कि दिवस में दादरी हलके की सबसे अधिक भागेदारी के लिए लगातार जनसंपर्क किया जाएगा। हलके के सभी 65 गांवों में न्योता देंगे। इस दौरान पूर्व सरपंच ताराचंद, लीला, पप्पू, सुरेंद्र, महावीर, संदीप, मुकेश, अनिल, ओम नंबरदार, संदीप आदि थे।

नुकसान की जानकारी से सीएम को अवगत करवाया

बाढ़ड़ा। देशभर में पीएम नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता शिखर पर है और बिहार चुनाव में वहां की जनता भाजपा गठबंधन को भारती बहुमत से दोबारा सत्ता में लाने का काम करेगी। मौजूदा समय में खरीफ की फसलों में बहुत नुकसान हुआ है जिसकी सारी जानकारी उन्होंने सीएम नायबसिंह सैनी को अवगत करवा दिया है। किसानों को सजगता बरतते हुए क्षतिपूर्ति पोर्टल पर अपने खराबे का ब्यौरा दर्ज करवाना चाहिए सरकार नुकसान की भरपाई का प्रयास करेगी।
यह बात भिवानी महेन्द्रगढ लोस सांसद धर्मबीर सिंह ने कस्बे के केनाल विश्रामगृह में भाजपा कार्यकर्ताओं के समक्ष कही। उन्होंने कहा कि देश की जनता की भावनाएं भाजपा के साथ है और इसी तरह विपक्षी सांसदों ने भी उपराष्ट्रपति के चुनाव में एनडीए के पक्ष में मतदान किया है। उन्होंने कहा कि केन्द्र व प्रदेश सरकार संयुक्त रुप से सडक़ों केा अपग्रेड व नइए सडक़मार्गो का निर्माण कर गांवों की बड़े शहरों से दूरी कम करने का काम कर रही है।

दादरी डिपो में लगे 52 हेल्परों को पक्का करने की मांग

लंबित मांगों को लेकर रोडवेज कर्मचारियों ने सौंपा ज्ञापन

कर्मचारी बोले चौबीसों घंटे जन सेवा के लिए रहते हैं तत्पर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

चरखी दादरी। मांगों को लेकर रोडवेज अधिकारी को ज्ञापन सौंपते हुए। फोटो : हरिभूमि

रोडवेज विभाग के कर्मियों द्वारा लगातार पिछले लंबे समय से अपनी मांगों व समस्याओं को लेकर उच्च अधिकारियों के समक्ष मांगो को उठाजा जा रहा है, लेकिन अभी तक कोई ठोस कदम इस दिशा में न उठाए जाने को लेकर कर्मी साथियों के बीच धीरे धीरे रोष पनप रहा है।

उनका कहना है कि जब वो चौबीसों घंटे जन सेवा के लिए तत्पर रहते है तो क्यों आखिर प्रदेश सरकार व आला अधिकारी उनकी सुनवाई करने को तैयार नहीं है। वो केवल अपना जायज हक मांग रहे है उसे देने में भी आनाकानी की जा रही है। सौंपे गए ज्ञापन में कर्मी साथियों द्वारा मुख्य रूप से दादरी डिपो में लगे 52 हैल्परों को पक्का करना, विभाग में चल रही किलोमीटर स्कीम की बसों पर पूरी तरह रोक लगाना, जो परमिट दिए गए है उनको रद्द करना, निजी करण ठेका प्रथा पर पूरी रोक, पीपीपी निजी इलेक्ट्रिक बसों की बजाए साधारण बसे विभाग में शामिल करना, कर्मशाला कर्मचारियों के कम किए राजपत्रित अवकाश बहाल करना, कौशल रोजगार निगम को भंग करवाना, खाली पडे पदों पर पक्की भर्ती, सभी श्रेणियों के खाली पदों पर पदोन्नति, कर्मियों के डीए, एलटसी, शिक्षा भत्ते का तुरंत भुगतान करवाने, सभी बस अड्डो पर आधुनिक विश्राम गृह बनाए जाए, नो लोस ना प्रोफिट की सरकारी कैंटिन व रैन बसेरे बनाए जाए, सरकार द्वारा हरियाणा रोडवेज के समान निजि बसों में सुविधा दिलवाई जाए टायर सहित सभी कलपुजों की उपलब्धता समय पर सुनिश्चित की जाए। अंबाला डिपों के चालक राजबीर की हत्या के बाद पूर्व मंत्री से समझौते को लागू किया जाए आदि मांगों को पुरजोर रूप से उठाते हुए जल्द से जल्द परेशानी हल करने के लिए अपील की गई।

36 सूत्रीय मांग पत्र रखा

इन्हीं मांगों व परेशानियों को लेकर आज एक बार पुन डिपो परिसरा में एसकेएस के बैनर तले हरियाणा राज्य परिवहन दादरी डिपो के साथियों ने मीटिंग करते हुए अपनी मांगों का ज्ञापन महाप्रबधंक को सौंपा। इसके साथ ही इसे महा निदेशक को प्रेषित भी करवाया गया। इस दौरान 36 सूत्रीय मांग पत्र के जरिए अपनी बातों का रखा गया। अध्यक्षता प्रांतीय प्रधान नरेंद्र दिनोद द्वारा की गई। संचालन डिपो प्रधान सुनील फौजी, सचिव योगेश जांगडा मिसरी, कोषाध्यक्ष रशीद खान ने करवाया। इस दौरान भूप धनासरी, सोमबीर कादमा, अनूप, आदि साथ थे।

यदुवंशी शिक्षा निकेतन में हिंदी दिवस मनाया

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में राजगुरु सदन ने मारी बाजी

चरखी दादरी। कार्यक्रम में विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

यदुवंशी शिक्षा निकेतन, मंदौला में शनिवार को हिंदी दिवस बड़े उत्साह से मनाया गया। प्रार्थना सभा के दौरान बच्चों ने कविताए और भाषण प्रस्तुत किए तथा अध्यापकों ने हिंदी भाषा के महत्व पर प्रकाश डाला। इसके बाद कक्षा दूसरी से पाँचवीं तक हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित हुई, जिसमें विद्यालय के चारों सदन — राजगुरु, सुखदेव, भगत सिंह और अंबेडकर ने भाग लिया। प्रश्न हिंदी भाषा और व्याकरण से जुड़े थे। प्रतियोगिता में राजगुरु सदन ने बाजी मारी। इसमें छात्राएँ आरुषि (कक्षा 5), नेहा और ओवी (कक्षा 4), ओमीषा (कक्षा 3) और गीतिका (कक्षा 2) ने अधिकतम सही उत्तर देकर अपने सदन को विजेता बनाया। कार्यक्रम का संचालन अनीता ने किया और निर्णायक मंडल में राजेश, ललिता और ज्योति रहीं। पूरा आयोजन मुख्याध्यापिका भारती के दिशा-निर्देशन में हुआ।

प्रचार-प्रसार का संकल्प

प्राचार्य नरेंद्र यादव ने कहा कि "हिंदी केवल भाषा नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति और पहचान का आधार है।" वहीं विद्यालय के चेयरमैन राव बहादुर सिंह ने संदेश दिया कि "मातृभाषा का सम्मान करना हर विद्यार्थी का कर्तव्य है।" इस अवसर पर अध्यापिका मोनू प्रियंका, बेबी, मोना, प्रिया और रीना सहित सभी शिक्षक गण और सभी विद्यार्थी मौजूद रहे और उन्होंने हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार व सम्मान का संकल्प लिया।

सड़कों की मरम्मत कार्य करें शुरू: डीसी

डीसी साहिल गुप्ता ने सड़क निर्माण से संबंधित अधिकारियों को दिए निर्देश

- बारिश के कारण जिले की अधिकतर सड़कों में हो चुके हैं बड़े बड़े गड्ढे, हादसों की आशंका

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

डीसी साहिल गुप्ता ने जिला में शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के सड़क निर्माण से संबंधित विभागों के अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे अपने-अपने विभागों के अधीन आने वाली सड़कों की फिलहाल की वास्तविक स्थिति को मौके पर जाकर देखें और बारिश के तुरंत बाद उनकी मरम्मत का कार्य करवाएं।

उन्होंने कहा कि सड़कों पर गड्ढे हादसों का कारण बनते हैं। गड्ढों की वजह से कोई हादसा नहीं होना चाहिए। डीसी गुप्ता ने डीआरडीए हाल में सड़कों की मरम्मत को लेकर संबंधित विभागों के अधिकारियों को जरूर निर्देश दे रहे थे। उन्होंने कहा कि अक्सर बारिश के दौरान सड़के खराब हो जाती हैं।

अबकी बार अत्यधिक बारिश के कारण कई सड़कों पर जल भराव की स्थिति बनी है। ऐसे में सड़कों की स्थिति सही ना होना स्वाभाविक है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि अब लगभग मानसून का सीजन समाप्त सा हो गया है। वे उनके अधीन आने वाली जिला में सभी सड़कों का तुरंत प्रभाव से सर्वे करवाएं। सर्वे के साथ ही उनकी मरम्मत कार्य का एस्टीमेट बनाएं।

पानी निकासी के कार्य की स्वयं निगरानी करें

बैठक के दौरान डीसी साहिल गुप्ता ने पीडब्लूडी बीएण्डआर, कृषि विपणन बोर्ड, एचएसवीपी, जिला परिषद और नगर परिषद व नगर पालिकाओं के अधिकारियो को निर्देश दिए कि सड़कों का बेहतर नवीनीकरण करना सुनिश्चित करें। सड़कों की एनओसी तुरंत प्रभाव से लें। डीसी ने सिंचाई, जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी, जिला विकास एवं पंचायत विभाग तथा राजस्व विभाग के अधिकारियों से जिला के विभिन्न गांवों में हुए जल भराव और निकासी प्रबंधों का बारीकी से जानकारी ली। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि सबसे पहले आबादी क्षेत्र से पानी निकालना जरूरी है। ऐसे में अधिक से अधिक संसाधन जरूरत के अनुरूप आबादी क्षेत्र में हुए जल भराव की निकासी में लगाए। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे पानी निकासी के कार्य की स्वयं निगरानी करें। उन्होंने कहा कि पानी निकासी में कोई भी अधिकार या कर्मचारी लापरवाही ना बरतें।

ये रहे मौजूद

इस दौरान लोक निर्माण विभाग का अधीक्षक अभियंता सुरेंद्र दलाल, सिंचाई विभाग के अधीक्षक अभियंता ओपी बिश्नोई और दिनेश राठी, बिजली निगम के अधीक्षक अभियंता विनोद पूनिया, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के अधीक्षक अभियंता सुनील रंगा, जिला राजस्व अधिकारी राजकुमार मौरिया, अभियंता लोकेश डागर, बीडीपीओ सोमबीर कादियान, बीडीपीओ विनोद सांगवान, बीडीपीओ उमेद सिंह सभी तहसीलदार, हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण, जिला परिषद और मार्केटिंग बोर्ड आदि के सभी संबंधित अधिकारी मौजूद रहे।

संघर्षशील कार्यकर्ताओं को संगठन में मिलेगी प्राथमिकता: सुशील

ब्राह्मण धर्मशाला में संगठन विस्तार को लेकर मंथन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बाढड़ा

कस्बे की ब्राह्मण धर्मशाला में कांग्रेस पार्टी के संगठन विस्तार को लेकर बैठक आयोजित हुई। बैठक की अध्यक्षता जिला कांग्रेस कमेटी के नयनियुक्त अध्यक्ष सुशील धानक ने की। उन्होंने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि बाढड़ा ब्लॉक के कांग्रेस कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि पार्टी के संगठन विस्तार में संघर्षशील कार्यकर्ताओं को प्राथमिकता दी जाएगी ताकि पार्टी के प्रति लोगों का विश्वास मजबूत हो।

उन्होंने कहा कि जिले में अनेक वरिष्ठ नेता हैं जिनके मार्गदर्शन में पार्टी भविष्य की रणनीति तय करेगी और जनसमस्याओं को लेकर सभी मिलकर काम करेंगे। पूर्व सीपीएस रणसिंह मान, पूर्व विधायक सोमवीर सिंह, पूर्व विधायक सुखविंद्र मांढी, किसान कांग्रेस के राष्ट्रीय कंवीनर राजू मान ने भी अपने विचार रखे। जिला अध्यक्ष सुशील धानक ने कहा कि भाजपा राज में किसी की सुनवाई नहीं है यही वजह है कि हर रोज प्रदेश के किसी ना किसी कोने में आंदोलन होने की खबर देखने और सुनने को मिलती है। उन्होंने कहा कि बाढड़ा में मुआवजे और बीमा 1लेम घोटाले की मांग को लेकर पिछले दो महीने से किसान धरने पर बैठे हैं लेकिन सरकार ने अभी तक उनकी कोई सुध नहीं ली है। इस बीच मु2यमंत्री नायब सैनी झोझू कलाँ का दौरा कर चुके हैं जो महज औपचारिकता भर साबित हुआ है।

ये रहे मौजूद : इस अवसर पर जिला कांग्रेस एस. सी सेल के प्रधान राजेश बाल्मीकि, सेवा दल के जिला अध्यक्ष जय भगवान शर्मा, युवा कांग्रेस के जिला अध्यक्ष दीपक सांगवान, दलबीर गांधी, जगत सिंह, डॉ ओम प्रकाश, सोमबीर श्योराण, राजेश गोपी, करतार सांतोर, विजय मोटू, विजय मंढोला, विजय फौजी, सुरेश धनासरी, राजेश श्यामकलां, सत्यवान बलौदा, परविंद्र ठेकेदार, मानबीर ठेकेदार, संदीप गोपी, आनंद वालिया, रोहताश रोहिल्ला, बिजेंद्र श्योराण, मास्टर ललित, राकेश उर्फ राखा शर्मा,बलवान फौगाट, जयदीप श्योराण, मामन जांगड़ा, वेद श्योराण, अजय कुमार, पृथ्वी नंबरदार, धर्मपाल सांगवान, धर्मेंद्र लांबा, मांगे राम जांगड़ा, सुरेंद्र कारी आढु, राजा धनासरी समेत अनेक कार्यकर्ता मौजूद रहे।

रोडवेज बस में गुम हुआ बैग लौटाकर ईमानदारी का दिया परिचय, बैग में 80 रुपये के थे आभूषण

लोहारू। दादरी से लोहारू रूट पर दौड़ने वाली हरियाणा रोडवेज की बस में शनिवार को बस में यात्रा कर रहे एक परिबार का बैग गुम हो गया। बैग में करीब 80 हजार रुपए के आभूषण थे। दरअसल यात्रियों का बैग बस में ही गिर गया था लेकिन बाद में बस का चालक अशोक कुमार और परिचालक शिव कुमार ने उक्त बैग असल मालिक तक पहुंचाने में ईमानदारी का परिचय दिया। यात्रियों ने रोडवेज कर्मचारियों की ईमानदारी और तत्परता की सराहना की है। राजस्थान के सूरजगढ़ निवासी सुरेंद्र पत्नी और बच्चों के साथ दादरी से लोहारू आ रहे थे। इसी दौरान सुरेंद्र की पत्नी का हैंडबैग, जिसमें सोने-चांदी के आभूषण थे, बस में गिर गया और सवारी बस से उतर गई। कुछ दूर जाने पर महिला को अहसास हुआ कि उनका बैग कहीं गिर गया है। बैग गुम होने की जानकारी मिलते ही परिवार ने लोहारू बस स्टैण्ड पहुंचकर एस.एस. सुनील और कर्मचारियों से पूछताछ की। तुरंत जिस बस में वो यात्रा कर रहे उस बस के परिचालक शिव कुमार और चालक अशोक कुमार से संपर्क किया गया। चालक और परिचालक ने बैग को सुरक्षित रखकर रोडवेज कार्यालय में मौजूद कर्मचारियों को सौंप दिया था। बाद में वह बैग असल मालिक को लौटा दिया गया। बैग मिलने पर सुरेंद्र ने राहत की सांस ली और रोडवेज के चालक-परिचालक सहित सभी कर्मचारियों का आभार जताया है। दौरान रोडवेज कर्मचारी डीआई जोगेंद्र, कृष्ण फरटिया, विक्की काकड़ोली, नरेश, संदीप सहित अन्य स्टाफ मौजूद रहा।

बलिदानी सुनील श्योराण को नमन किया

बाढड़ा। सामाजिक संगठनों के पदाधिकारियों ने कस्बे के सर छोटूराम किसान भवन में आज शनिवार को जाट आरक्षण आंदोलन के प्रथम बलिदानी सुनील श्योराण की पूण्यतिथि पर उनको नमन कर उनके समाज के लिए अपने प्राणों की सर्वोच्च बलिदान के लिए श्रद्धांजलि अर्पित की। कस्बे में आयोजित श्रद्धासुमन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए श्योराण खाप 25 अध्यक्ष बिजेंद्र बेरला ने कहा कि जाट आरक्षण के लिए सुनील कुमार ने अपने प्राणों की आहुति देकर इतिहास रचा है और उनके बलिदान को सदैव स्वर्ण अक्षरों में अंकित रखा जाएगा। जाट आरक्षण यह एक जरुरी मांग थी और सरकार द्वारा लगातार बैठकों के बावजूद इस मांग को रद्दी की टोकरी में डालना सरकार की हठधर्मिता और हमारे बलिदानियों का अपमान है। इस अवसर पर अलग अलग संगठन पदाधिकारियों ने उनको नमन कर उनकी बलिदानी वीरता को याद किया।

वंशिका ने निबंध लेखन में द्वितीय स्थान प्राप्त किया

चरखी दादरी। सरस्वती विद्या मंदिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कादमा में विद्यार्थियों को सम्मानित करते प्राचार्य। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

सरस्वती विद्या मंदिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कादमा के विद्यार्थियों ने जिला स्तरीय निबंध लेखन प्रतियोगिता में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की। प्रतियोगिता में जिले के विभिन्न विद्यालयों के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों ने भाग लिया और अपनी लेखन क्षमता, चिंतनशीलता तथा रचनात्मक अभिव्यक्ति का परिचय दिया। प्रतियोगिता में विद्यालय की छात्रा वंशिका ने अपनी उत्कृष्ट लेखन शैली के दम पर द्वितीय स्थान हासिल किया, वहीं छात्र नमन ने प्रभावशाली प्रदर्शन करते हुए छठा स्थान प्राप्त किया।

निदेशक ने दी बधाई

निदेशक मुन्ना लाल शर्मा व सचिव महेश शर्मा ने विद्यार्थियों को बधाई देते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

सीबीएस स्कूल में त्रिवेणी अस्पताल ने शिक्षकों को किया सम्मानित

चरखी दादरी। शिक्षकों को सम्मानित करते त्रिवेणी अस्पताल स्टाफ। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

हिंदी दिवस पर सीबीएस पब्लिक स्कूल मोडी में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें त्रिवेणी दंत अस्पताल के डॉक्टरों की टीम ने विद्यालय शिक्षकों को सम्मानित किया। डॉक्टर कपिल शर्मा, डॉक्टर शिव यादव ने विद्यालय परिसर में अनुशासन, शिक्षा स्तर तथा छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु किए जा रहे प्रयासों की प्रशंसा की।

विद्यालय प्रबंधक डा. सुरेश सोलंकी ने कहा कि ऐसे आयोजन शिक्षकों का मनोबल बढ़ाते हैं तथा समाज में शिक्षा के महत्व को और सशक्त करते हैं। कार्यक्रम के समापन पर प्राचार्य प्रदीप ने सभी शिक्षकों के साथ विद्यालय परिवार ने हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को आगे बढ़ाने की प्रतिज्ञा ली।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन नं. : 8814999151, 9253681005, 8295157800

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2000/- रु. 2500/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
भिवानी : हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन : 8814999170, दादरी : 9253681008

जब तक कंपनी पुलिस कार्यवाही को वापस नहीं लेगी, तब तक जारी रहेगा धरना

टावर कंपनी की किसान के खिलाफ एकतरफा कार्रवाई का विरोध

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

भिवानी। टॉवर कम्पनी द्वारा एकतरफा कार्रवाई के विरोध में आयोजित पंचायत में उपस्थित लोग।

अखिल भारतीय किसान सभा तहसील भिवानी व अन्य किसान संगठनों व ग्रामीणों ने गांव प्रहलादगढ़ के खेतों में शनिवार को किसान महापंचायत की। जिसकी अध्यक्षता गांव प्रहलादगढ़ के सरपंच प्रतिनिधि ओमप्रकाश, पूर्व सरपंच सुबे सिंह, मास्टर शेर सिंह, संतोष देशवाल, जगदीश गोविंदपुरा, धिराना के पूर्व सरपंच मनीराम मलिक, खंजानी व तृप्ता ने संयुक्त रूप से की है। पंचायत का मंच संचालन किसान सभा के ब्लाक सचिव करतार ग्रेवाल ने किया।

इस मौके पर किसान सभा के जिला प्रधान रामफल देशवाल, उपप्रधान कामरेड ओमप्रकाश व भारतीय किसान यूनियन के रवि आजाद, किसान सभा के याद विरेंद्र शर्मा ने कहा कि प्रहलादगढ़ के किसान रमेश अपने खेत में ट्रैक्टर से खेत की जुताई कर रहे थे। उसको टावर का रस्सा टूटने की कोई जानकारी नहीं है। टावर कंपनी के कर्मचारी मजदूरों ने कमजोर रस्सा लगाने से टावर टूटा है। उन्होंने किसान की बेवजह पिटाई की है, जो नागरिक हस्पताल में भर्ती है। इसके प्रति ग्रामीणों में कंपनी के खिलाफ काफी गुस्सा था।

किसान संगठनों ने कंपनी के कर्मचारियों पर किसान की बिना वजह पिटाई करने वालों के खिलाफ कानूनी कार्यवाही की जाए, निर्दोष किसान के विरुद्ध पुलिस कार्यवाही व सवा करोड़ का कथित कंपनी का दावा खारिज किया जाए।

कमेटी बनाई

अन्यथा किसान संगठन प्रशासन व कंपनी की तानाशाही के खिलाफ जोरदार आंदोलन चलाने पर मजबूर होंगे। जब तक कंपनी द्वारा किसान रमेश के खिलाफ मनमानी कार्यवाही वापिस नहीं होगी, तब तक टावर के पास अनिश्चित कालीन धरना जारी रहेगा और वे किसान के उत्पीडऩ को सहन नहीं करेंगे। आन्दोलन चलाने के लिए 21 सदस्यी कमेटी का गठन किया गया है, जो इस आंदोलन को चलाएगी।

तीन दिन का समय दिया

वीरेन्द्र नंबरदार ने कमेटी का फैसला सुनाते हुए कहा कि प्रशासन तथा कंपनी को यह मामला सुलझाने के लिए तीन दिन का समय दिया जाता है। यदि कंपनी ने समाधान नहीं किया तो किसान संगठनों व चोगामा महापंचायत को शामिल करके बड़ी किसान महापंचायत करेंगे तथा टावर का काम बंद करवाएंगे। धरने में प्रहलादगढ़ विरेंद्र नंबरदार, सुरेश डाक्टर, अशोक कुमार, सुभाष यादव, निमड़ीवाली से राकेश आर्य, वीरभान गिल, धिराना से याद विरेंद्र शर्मा, प्रहलादगढ़ से छतरपाल सहित सैंकड़ों ग्रामीण मौजदू रहे।

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 14 सितंबर 2025

विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली तीसरी भाषा हिंदी की जड़ें प्राचीन भारतीय आर्य भाषा परिवार की है, जिसकी जननी संस्कृत है। संस्कृत, जिसे 'देववाणी' भी कहा जाता है। इसकी विशिष्टताओं ने हिंदी को आज विश्व के कोने-कोने तक पहुंच दिया है। अगर इसके प्रसार के लिए कुछ और प्रयास किए जाएं तो निस्संदेह इसका वर्चस्व और भी बढ़ेगा।

हिंदी दिवस विशेष

भारत की आत्मा है हिंदी

{ आवरण कथा / भूपेंद्र शर्मा }

आज हिंदी भाषा भारत तक सीमित नहीं है। यह विश्व भर में एक सशक्त पहचान बना चुकी है। दुनिया के कई देशों में लाखों लोगों द्वारा बोली जाती है। भारत की आधिकारिक भाषा के रूप में, हिंदी सीखने से भारतीय आबादी के एक बड़े हिस्से के साथ संवाद एवं जुड़ने का अवसर मिलता है। भारत की विविध संस्कृति, जीवंत अर्थव्यवस्था तथा समृद्ध विरासत हिंदी को यात्रा, कार्य एवं सांस्कृतिक खोज के लिए एक श्रेष्ठ माध्यम बनाती है। वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत के बढ़ते प्रभाव के कारण हिंदी में कुशल पेशेवरों की मांग बढ़ रही है। कई बहुराष्ट्रीय कंपनियां, विशेष रूप से जिनके भारत में निर्माण, उत्पादन कार्य या ग्राहक हैं, उन कर्मचारियों को महत्व देती है, जो हिंदी में प्रभावी ढंग से संवाद कर सकते हैं। हिंदी सीखना करियर की संभावनाओं को बढ़ा सकता है, खासकर अंतरराष्ट्रीय व्यापार, पर्यटन, पत्रकारिता, अनुवाद एवं कूटनीतिक सेवाओं जैसे क्षेत्रों में।

क्षेत्रीय भाषाओं का प्रवेश द्वार

हिंदी का विकास कई चरणों में हुआ। अपभ्रंश से होते हुए, इसने अपनी वर्तमान पहचान बनाई। मध्यकाल में खड़ी बोली के रूप में इसने अपनी नींव रखी, जो आगे चलकर आधुनिक हिंदी का आधार बनी। हिंदी भारत में बोली जाने वाली विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं को समझने एवं सीखने के लिए एक प्रवेश द्वार की तरह है। बंगाली, मराठी, गुजराती एवं पंजाबी सहित कई भारतीय भाषाएं व्याकरण, शब्दावली तथा लिपि के मामले में हिंदी के साथ समानताएं साझा करती हैं।

फिल्म उद्योग तक पहुंच

भारतीय फिल्म उद्योग में प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में फिल्मों का निर्माण होता है, जिन्हें भारत में ही नहीं, विश्व के अनेक देशों में देखा जाता है। हिंदी सिनेमा की विश्व में अद्भुत लोकप्रियता है। विदेशों में हिंदी के प्रसार में हिंदी फिल्मों का बड़ा योगदान है। हिंदी फिल्में, हिंदी गीत एवं टीवी शो की जीवंत दुनिया हिंदी सीखने वालों के लिए बड़ा सरल माध्यम है। वहीं इनके माध्यम से विश्वभर में फैले भारतीय प्रवासियों के साथ भारत एवं भारतीय संस्कृति के अटूट, मधुर संबंध स्थापित होते हैं। इसीलिए हिंदी को भारत की आत्मा कहते हैं।

विश्व में 61 करोड़ हिंदी भाषी

वर्ल्ड लैंग्वेज डेटाबेस के अनुसार, हिंदी भाषा वर्तमान समय में 61 करोड़ लोगों द्वारा बोली जाती है। विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस में स्थित है। यह सचिवालय हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए 11 फरवरी 2008 से कार्यरत है। हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए समय-समय पर अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलनों का आयोजन किया जाता है।

राजभाषा विभाग के प्रयास

सन 2019 से सभी 59 मंत्रालयों में हिंदी सलाहकार समितियों का गठन किया गया। अब तक कुल 528 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन भी किया जा चुका है। विदेशों में भी लंदन, सिंगापुर, फिजी, दुबई एवं पोर्ट-लुई में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियां बनाई गई हैं। भारत ने संयुक्त राष्ट्र में हिंदी भाषा के उपयोग को बढ़ावा देने की भी पहल की है। पहला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन बनारस में 13-14 नवंबर, 2021 को तथा 14 सितंबर 2022 को सूरत में दूसरा सम्मेलन आयोजित किया गया। इस साल पुणे में तीसरा अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। विभाग ने कुल 90 हजार शब्द का एक 'ई-महाशब्दकोष' मोबाइल एप तथा लगभग 9 हजार वाक्य का 'ई-सरल' वाक्यकोष भी तैयार किया है।

हिंदी की विशिष्टताएं

देवनागरी लिपि: हिंदी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है, जो देखने में मनमोहक और ध्वन्यात्मक रूप से सटीक है। इसमें 11 स्वर एवं 33 व्यंजन हैं, जिनमें प्रत्येक ध्वनि का अलग स्वर एवं उच्चारण है।

स्वर की लंबाई: हिंदी में कुछ स्वर ध्वनियों का उच्चारण विस्तारित अवधि के साथ किया जा सकता है, जिससे शब्दों का अर्थ बदल जाता है। उदाहरण के लिए, 'मा' का अर्थ 'मां' है, जबकि 'मान' का अर्थ 'सम्मान' है।

मानद रूप: हिंदी व्यक्तियों को सम्मानपूर्वक संबोधित करने के लिए मानद रूपों को शामिल करती है। बड़ों, सम्मानित व्यक्तियों या उच्च सामाजिक स्थिति वाले व्यक्तियों से बात करते समय सम्मानजनक सर्वनामों, क्रिया रूपों एवं वाक्य संरचनाओं का उपयोग भाषा के सांस्कृतिक प्रभाव को सम्मान एवं शिष्टाचार के साथ प्रदर्शित करता है।

लिंग वाली संज्ञा: हिंदी में संज्ञाओं के तीन लिंग हैं। पुल्लिंग, स्त्रीलिंग एवं नपुंसकलिंग। एक संज्ञा का लिंग अकसर विशेषणों, क्रियाओं तथा सर्वनामों के समझौते को निर्धारित करता है, जो इसके साथ उपयोग किए जाते हैं।

सर्वनाम का अंतर: हिंदी एकवचन के लिए औपचारिक एवं अनौपचारिक सर्वनामों के बीच अंतर करती है। औपचारिक सर्वनाम 'आप' का प्रयोग सम्मान दिखाने या उच्च पदस्थ व्यक्ति को संबोधित करने के लिए किया जाता है, जबकि अनौपचारिक सर्वनाम 'तुम' का प्रयोग समान सामाजिक स्थिति वाले व्यक्तियों के साथ किया जाता है।

जटिल क्रिया प्रणाली: हिंदी की क्रिया प्रणाली में विभिन्न क्रिया रूप एवं काल हैं। क्रियाओं का संयोजन तनाव, पहलू, मनोदशा एवं विषय के साथ समझौते जैसे कारकों से प्रभावित होता है, जिससे भाषा की क्रिया संरचना जटिल तथा अभिव्यंजक हो जाती है।

संस्कृत का प्रभाव: हिंदी पर संस्कृत का गहरा प्रभाव है। कई हिंदी शब्दों की उत्पत्ति संस्कृत से हुई है, जो शब्दावली को समृद्ध करती है तथा भारत की प्राचीन सांस्कृतिक एवं दार्शनिक परंपराओं के साथ गहरा संबंध प्रदान करती है।

ध्वनि विविधता: हिंदी में ध्वनियों की एक विस्तृत श्रृंखला है, जिसमें स्वर, व्यंजन एवं नासिक्य ध्वनियां हैं। इसकी ध्वन्यात्मक सूची विविध मधुर उच्चारण प्रवाहित करती है।

क्षेत्रीय विविधता: भारत के विभिन्न हिस्सों में हिंदी की विभिन्न क्षेत्रीय बोलियां तथा शैली है। प्रत्येक क्षेत्र की अपनी शब्दावली, उच्चारण एवं व्याकरणिक विविधताएं हैं, जो हिंदी भाषी जनमन के भीतर भाषाई विविधता को दर्शाती हैं।

अभी अधूरा है विकास

हिंदी अपनी वैश्विक पहचान रखती है, किंतु इसके विकास के लिए अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है।

तकनीकी विकास: हिंदी में तकनीकी शब्दावली को अधिक विकसित करने की आवश्यकता है, ताकि विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं इंजीनियरिंग जैसे क्षेत्रों में इसका उपयोग बढ़ सके।

मानकीकरण एवं सरलता: बोल-चाल एवं लेखन में एकरूपता लाने के लिए मानकीकरण को बढ़ावा देना आवश्यक है।

सरकारी प्रोत्साहन: सरकार को हिंदी के उपयोग को सभी क्षेत्रों में बढ़ावा देना चाहिए, विशेषकर शिक्षा एवं प्रशासनिक कार्यों में।

वैश्विक मंचों पर उपयोग: अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं में हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दिलाने के प्रयास होने चाहिए। *

हिंदी दिवस और संविधान में स्थान

हिंदी दिवस मनाने का इतिहास भारत के स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ा है। 14 सितंबर 1949 को, भारतीय संविधान सभा ने हिंदी को भारत की आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाया। यह निर्णय हिंदी को राष्ट्र की एकता के सूत्र के रूप में स्थापित करने के लिए लिया गया था। पहला हिंदी दिवस 1953 में मनाया गया। यह दिन हमें भाषा के महत्व और उसके संरक्षण की याद दिलाता है। भारतीय संविधान के भाग-17 में अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा संबंधी उपबंध हैं। अनुच्छेद 120 (संसद में प्रयोग की जाने वाली भाषा) भाग 17 में अनुच्छेद 348 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, संसद में कार्य हिंदी में या अंग्रेजी में किया जाएगा। अनुच्छेद 343 (संघ की राजभाषा) संघ की राजभाषा हिंदी एवं लिपि देवनागरी होगी, संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप होगा।

{ विचारणीय / लोकमित्र गौतम }

हिंदी को लेकर सहज नहीं युवा पीढ़ी

इसे विडंबना ही कहना चाहिए कि जिस हिंदी को बोलने, जिसमें मनोरंजन करने में युवा पीढ़ी खूब आनंद लेती है, उसे ही लिखने और पढ़ने में असहज रहती है। हालांकि इसके लिए सिर्फ वही नहीं जिम्मेदार है। ऐसे में इस समस्या के निराकरण के लिए परिवार, समाज से लेकर व्यवस्था तंत्र को भी विचार करना होगा।

भारत की कुल आबादी में से 65 फीसदी से ज्यादा युवा हैं, जिनकी उम्र 35 साल या इससे कम है। इनमें से 60 से 65 फीसदी युवा फर्राटे से हिंदी बोलते-समझते हैं। ये आमतौर पर हिंदी फिल्में भी देखते हैं और ओटीटी प्लेटफॉर्म पर भी हिंदी के कार्यक्रम चाव से देखते हैं। मगर इनकी एक ऐसी कमजोरी है, जिस पर आम लोगों का यकायक ध्यान नहीं जाता। इनमें से करीब आधे युवा ऐसे हैं, जो हिंदी बोलते हैं, समझते हैं, लेकिन प्रवीणता से हिंदी पढ़ और लिख नहीं पाते। कुछ पढ़ते भी हैं तो सहजता से शुद्ध-शुद्ध नहीं पढ़ पाते।

आधी युवा आबादी है असहज: देश में हिंदी बोलने वाले करीब आधे युवा हिंदी में कतई सहज नहीं है। ऊपर से देखने में यह कोई बहुत बड़ी समस्या नहीं लगती। यहां तक कि हिंदी भाषी मां-बाप को भी अपने हिंदी लिख और पढ़ न पाने में असहज बच्चों से किसी तरह की भावनात्मक परेशानी नहीं होती, लेकिन सच बात यह है कि हिंदी की सबसे कमजोर कड़ी यही युवा पीढ़ी है, जो ऊपर से तो हिंदी में बहुत सहज दिखती है, मगर भीतर से हिंदी को लेकर बिल्कुल असहज है। दरअसल, यही वह पीढ़ी है, जो अप्रत्यक्ष रूप में हिंदी को मौखिक भाषा तक सीमित करने में लगी है।

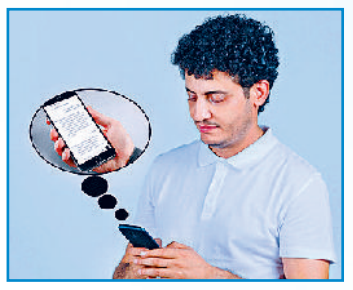

शैक्षिक-सांस्कृतिक विडंबना: यह सचमुच हिंदी के साथ बड़ी भाषाई विडंबना है, क्योंकि हिंदी बोलने वाले, हिंदी पढ़ने वाले, हिंदी में मनोरंजन करने वाले युवा बाहरी तौर पर यह प्रभाव देते हैं कि जैसे वो हिंदी सेवी हों। पर वास्तव में वो हिंदी सेवी नहीं होते। दक्षिण भारत में खासकर बेंगलुरु, चेन्नई में जिन उत्तर भारतीय युवाओं की पहचान हिंदीभाषी होने से है, वास्तव में ये हिंदीभाषी समझे जाने वाली युवा पीढ़ी का बड़ा हिस्सा भी उन्हीं की तरह हिंदी में असहज है। भले यह बाहरी तौर पर हिंदी वाले लगते हों, पर सचमुच में ये हिंदी वाले नहीं हैं, हिंदी को इनसे फायदा कम, नुकसान ज्यादा होता है, क्योंकि हिंदी बोलना, हिंदी में बातें करना, हिंदी में मनोरंजन करना, लेकिन हिंदी लिख और पढ़ न पाना या इसमें सहज न हो पाना, सिर्फ भाषाई समस्या नहीं है। यह सांस्कृतिक और शैक्षिक त्रासदी भी है।

नहीं है हिंदी की गहरी समझ: दक्षिण या पश्चिम भारत के बड़े शहरों में ही नहीं बल्कि उत्तर भारत के भी बड़े शहरों में ऐसे युवाओं की भरमार है। दिल्ली में भी 25 से 30 फीसदी ऐसे युवा हैं, जो बस हिंदी में बातें करते हैं, गाने सुनते हैं, वेब सीरीज देखते हैं, लेकिन सौ शब्दों का आवेदनपत्र हिंदी में नहीं लिख सकते। घंटों हिंदी में बहस करने वाले उस विषय पर एक पेज भी हिंदी में नहीं लिख पाते। यह इसलिए बड़ी समस्या है कि इससे हिंदी की असली समस्या पर पर्दा पड़ा रहता है। यह भ्रम बना रहता है कि हिंदी, बोलने, जानने और समझने वाले बहुत बड़ी तादाद में लोग हैं। लेकिन यह ऐसी ढोल के भीतर पोल वाली खोखली पीढ़ी है, जो न तो हिंदी का साहित्य जानती है, न कविता जानती है, न हिंदी के अखबार पढ़ती है और न ही हिंदी के ऐतिहासिक दस्तावेजों से ही इसका कोई परिचय है। ऐसे में भला यह पीढ़ी हिंदी का कैसे भला करेगी? यह तो उल्टा हिंदी में रह कर ही हिंदी को कमजोर करती है।

पहचान होती है मातृभाषा: अगर आप ऐसी पृष्ठभूमि से आते हैं कि आपके घर की भाषा यानी मातृभाषा हिंदी है और पढ़ाई और कामकाज की भाषा अंग्रेजी है, तो भले रोज के कामकाजी घंटों में आपको यह खुशफहमी रहती हो कि अपनी कमजोर हिंदी को लेकर आपमें किसी तरह की असहजता नहीं है, लेकिन वास्तविकता यह होती है कि अगर हम अपनी मातृभाषा को पढ़ने और लिखने में सहज नहीं होते तो हमारे अंदर एक स्वतः जन्मी हीन भावना हर समय रहती है। जो लोग अपनी मातृभाषा को सही से लिखना, पढ़ना नहीं जानते, उन्हें अपनी दुनिया के सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भों का भी पता नहीं होता। दिन रात अंग्रेजी पढ़ने वाले ज्यादातर भारतीय अंग्रेजी के मुहावरों, उसकी लोकोक्तियों में मौजूद गहरे सांस्कृतिक संदर्भों से कभी नहीं जुड़ पाते, इसलिए बहुत सी बातों को वो कभी भी गहराई से समझ नहीं पाते। हमें लिपि की कठिनाई का बहाना बनाकर अपनी भाषा से नहीं कटना चाहिए। एक बार अगर हम अपनी भाषा से कट गए, तो हम अपनी स्मृतियों से, पीढ़ीगत धरोहरों से और साहित्यिक विरासत से भी कट जाते हैं।

डिजिटल जीवनशैली का प्रभाव: इसमें आज की डिजिटल लाइफस्टाइल और बाहर के देशों से आने वाली तकनीकी का भी हाथ है। लेकिन इस आरोप से तो हम अपनी भाषा के साथ लगाव न रख पाने को सही नहीं ठहराते। माना कि डिजिटल युग में मोबाइल और सोशल मीडिया में रोमन लिपि में लिखे, पढ़े जाने का चलन है, जिससे देवनागरी की प्रैक्टिस खत्म होती है। लेकिन यह यूं ही स्वतः नहीं पैदा हो गया। इस स्थिति के पैदा होने में बकायदा सांस्कृतिक संदर्भों का योगदान है। आज जिस तकनीक का आप अपने जीवन में इस्तेमाल कर रहे हैं, वह किसी हिंदी भाषी ने नहीं विकसित की, वह इस तकनीक को हिंदी के अनुकूल क्यों विकसित करता? अतः हिंदी के साथ अपने सहज और आत्मीय रिश्ते आपको खुद ही रखने है, इसके लिए किसी तकनीकी कमी या उसके संकट को बहाना नहीं बना सकते। *

{ व्यंग्य / सूर्य कुमार पांडेय }

हिंदी से हमें आशा है। हिंदी हमारी राजभाषा है। इसके स्मरण मात्र से पुलकित हो उठता हमारा अंग-अंग है। हिंदी हमारी मदर टंग है। मैं कहां तक करूं हिंदी की महिमा का बखान? हिंदी है सूर, तुलसी, मीरा, रसखान। इसीलिए हम इसकी पूजा करते हैं।

हिंदी हमारी मदर टंग है

मुझे हिंदी दिवस के एक कार्यक्रम में जाना पड़ा। मैं जैसे ही माइक के सामने हुआ खड़ा, आयोजक ने कहा, 'आज आपको हिंदी पर एक कविता जरूर सुनानी है।'

मैंने कहा, 'तो सुनिए, जो हिंदी की कहानी है। हिंदी समस्त भारतीय भाषाओं की रानी है। हिंदी का बड़ा सम्मान है। यह हमारी आन-बान-शान है। इस पर हमें गर्व है, दर्प है, अभिमान है। क्योंकि हिंदी महान है।

हिंदी से हमें आशा है। हिंदी हमारी राजभाषा है। इसके स्मरण मात्र से पुलकित हो उठता हमारा अंग-अंग है। हिंदी हमारी मदर टंग है। मैं कहां तक करूं हिंदी की महिमा का बखान? हिंदी है सूर, तुलसी, मीरा, रसखान। इसीलिए हम इसकी पूजा करते हैं। वर्ष भर पूजाघरों में मूर्तिवत सजाकर-संवार कर धरते हैं। इस भाषा में नहीं है कोई खोट। इसे साल के बाकी दिनों में तलाशो तो हिंदी वैसे ही मिला करती है, जैसे किसी माफिया के पूजाघर में रखे हुए नंबर दो के करेंसी नोट।

हिंदी हमारी अभिलाषा है। यह हमारी राजभाषा है। इसलिए इसकी पूजा करना हमारी मजबूरी है। जैसे आज की सियासत में अशालीन होना जरूरी है।

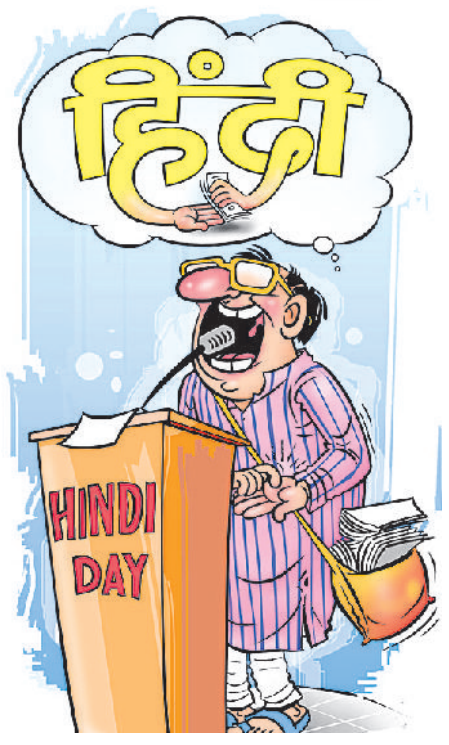

हिंदी का बड़ा महत्व है। हिंदी से हमें ममत्व है। हिंदी हमारे लिए वैसे ही है, जैसे गांव वालों के लिए मेला, जैसे मजदूरों के लिए ठेला और रैली में रेला। हिंदी हमारी शोभा है, हमारा अलंकार है। हिंदी हमारा अंतिम प्यार है। हिंदी का नाम लेते ही हमारे अधरों पर फूल खिलते हैं। हिंदी हमारे लिए इसलिए भी प्यारी है

क्योंकि हिंदी में मांगों तो वोट भी आसानी से मिलते हैं। इसीलिए तो हर राजनेता हिंदी के साथ दिखता है। अहिंदी भाषी सियासातदान भी हिंदी सीखता है।

हिंदी पर अब और कितना सुनाऊं मेरे भाई? हिंदी हमारे भाल की बिंदी है, और लोग हैं कि इतनी-सी बात समझ पाते नहीं कि मर्द बिंदी लगाते नहीं। तो आधी आबादी को छूट, बच गई आधी तो उसको भी है आजादी कि फैशन से फुर्सत हो तो बिंदी लगाएं। इस विदेशी कल्चर की क्यारी में हम कैसे हिंदी का प्लांट लगाएं? कहिए, आयोजक जी, अभी भी आपका मन नहीं भरा हो तो हम हिंदी पर और भी सुनाएं।'

आयोजक बोला, 'अब आप कृपापूर्वक जाएं और नेक्स्ट ईयर अगेन हिंदी पर ऐसी ही एक नई कविता लिखकर अवश्य लाएं।' *

इंजेक्शन की नवीन तकनीक से स्पाइन रोगों का उपचार

सर्जरी के बिना ही सिर्फ इंजेक्शन तकनीक के जरिये स्पाइन (रीढ़) रोगों का बेहतर और विश्वसनीय उपचार विश्वविख्यात डॉ. प्रमोद पहारिया द्वारा ग्वालियर में हो रहा है। आईये जानते हैं इस तकनीक के असाधारण लाभ–

मुख्यमंत्री मध्यप्रदेश ने डॉ. प्रमोद पहारिया को प्राईड ऑफ एम.पी. अवार्ड दिया।

इस ट्रीटमेंट की कितनी बार आवश्यकता होती है?
सिर्फ एक ही बार पर्याप्त है।

सर्जरी की अपेक्षा इस तकनीक के क्या फायदे हैं?
सर्जरी के दौरान पैरालिसिस, पैलाप्लेजिया, ब्लैडर एवं बोवेल के कंट्रोल में क्षति, पैरों में कमजोरी, इंफेक्शन, इंप्लांट फैलियर जैसे जो कॉम्पिलकेशन देखने को मिलते हैं, वैसा इसमें खतरा नहीं है।

किन मरीजों का इलाज इस तकनीक से संभव है?
डिस्क प्रोलेप्स जैसे L4-L5, L5-S1, साइटिका, लंबर या सर्वाइकल रेडीक्युलोपैथी, डिजरनेरेटिव डिस्क, फैसिट जॉइन्ट सिंड्रोम, माइलोपैथी, लंबर कैनाल स्टेनोसिस, स्पॉन्डिलाइटिस आदि में कारगर है।

जो रोगी ऑपरेशन करवा चुके हैं उसमें भी यह कारगर है ?
यदि ऑपरेशन के बाद दबाव बना रहता या दोबारा दबाव आ जाता है तो उसमें भी यह तकनीकी कारगर है।

किस उम्र के लिये यह चिकित्सा है?
15 से 85 वर्ष के मरीजों के लिये।

एक डिस्क लेवल के ट्रीटमेंट में कितना खर्च आता है?
स्पाइन सर्जरी में जहां 3 लाख तक का खर्चा आता है वहीं यह उपचार मात्र 20000 तक में हो जाता है। विदेशों में इसका खर्च 50 गुना तक है।

कितने समय में रोगी घर जा सकता है?
एक घण्टे बाद ही घर जा सकता है। जबकि सर्जरी में 3 माह तक रोगी को अपने काम से अलग रहकर आर्थिक क्षति उठाना पड़ती है।

इस ट्रीटमेंट की सफलता की दर कितनी है?
90 से 95% सफल है। अब तक लगभग 7,500 मरीज हमेशा के लिए ठीक हो चुके हैं। यह इंजेक्शन प्रॉब्लम साइट में लगाया जाता है।

इस ट्रीटमेंट का असर कब तक रहता है?
इसमें जड़ से इलाज होता है।

क्या यह स्टेरॉइड इंजेक्शन है?
नहीं, यह एक भ्रम है। यह एक सेफ अमेरिकन प्रोसीजर है, जो एक विशेष मशीन की निगरानी में किया जाता है।

NBC®

डॉ. प्रमोद पहारिया
स्पाइन सर्जन
MBBS, D.Ortho, DNB, M.Ch. (Ortho)
पूर्व सर्जन– सर गंगाराम हॉस्पिटल एवं इंडियन स्पाइनल इंज्यूरी सेन्टर, नई दिल्ली
देहली हॉस्पीटल, ओल्ड श्री टॉकीज, बारादरी, मुरार, ग्वालियर (म.प्र.)
समय : दोपहर 12 बजे से 3 बजे तक
व्हाट्सएप पर रिपोर्ट भेजकर ही संपर्क करें
सम्पर्क – 7354858466 | www.nonsurgicalspinecentre.in

{ लघुकथा / शीला श्रीवास्तव }

हिंदी बनाम इंग्लिश

रिया बहुत देर से अपने कमरे में चहलकदमी कर रही थी। नमिता ने पूछा, 'क्या बात है बेटी, क्यों परेशान हो?'

'मेरे स्कूल में पैरेंट्स मीटिंग है, और पापा घर पर नहीं हैं।' रिया खीझे स्वर में अपनी मम्मी से बोली।

'अरे तो क्या हुआ? मैं हूं ना। मैं चलती हूं पैरेंट्स मीटिंग में।' मां बोलीं।

'आप तो रहने ही दें। आपको इंग्लिश बोलना कहां आती है? आप आएंगी तो मेरा स्कूल में मजाक ही बनेगा।' रिया का जवाब सुनकर मां स्तब्ध रह गई। इस बात के लिए वह अकसर अपने पति से भी खरी-खोटी सुनती थी, आज बेटी ने भी सुना दिया। कुछ दिनों बाद स्कूल में हिंदी दिवस के अवसर पर एक प्रतियोगिता का आयोजन होने वाला था, जिसका शीर्षक था, 'हिंदी बनाम इंग्लिश।' रिया जानती थी, मम्मी की हिंदी पर बहुत अच्छी पकड़ है। उसने पहले मम्मी से अपने पिछले बर्ताव के लिए मांफी मांगी फिर बोली, 'मम्मी, प्लीज आप मेरे लिए एक स्पीच लिख कर दे दीजिए।' मां पूरे मनोयोग से स्पीच लिखने में जुट गई। उसकी मेहनत रंग लाई। रिया को प्रथम पुरस्कार मिला। स्कूल से आते ही रिया अपनी मम्मी के गले लग गई, बोली, 'आपके लिखे स्पीच ने आज मुझे स्कूल में फेमस कर दिया। यूं आर ग्रेट मम्मी! यह पुरस्कार मैं आपको समर्पित करती हूं।'

अपनी बेटी की नजरों में अपने लिए सम्मान देख मां की आंखें खुशी से छलक आईं। *

स्पेशलः इंजीनियर्स डे, 15 सितंबर

पिछली सदी में हुए भारत के महान सिविल इंजीनियर एम. विश्वेश्वरैया की जयंती को इंजीनियर्स डे के रूप में मनाते हैं। इस अवसर पर हम आपको बता रहे हैं देश के अलग-अलग इलाकों में स्थित कुछ ऐसे निर्माणों के बारे में, जो इंजीनियरिंग की शानदार मिसाल पेश करते हैं। इनकी विशेषताओं के बारे में जानकर आप अचरज किए बिना नहीं रह पाएंगे।

देश में कई जगह मौजूद हैं इंजीनियरिंग के गौरवशाली प्रतीक

चिनाब पुल जम्मू-कश्मीर के रियासी में

बांद्रा-वर्ली सी लिंक मुंबई में

बेमिसाल

शिखर चंद जैन

अपने देश के अलग-अलग क्षेत्रों में निर्मित किए गए इंजीनियरिंग के ये नायाब नमूने हर किसी को हैरान कर देते हैं। ये गौरवशाली प्रतीक भारतीय इंजीनियरिंग की नई प्रगति का प्रतिनिधित्व करते हैं।

चिनाब रेलवे ब्रिज

जम्मू-कश्मीर के रियासी जिले में स्थित यह विश्व का सबसे ऊंचा रेलवे आर्च ब्रिज है। यह 359 मीटर ऊंचा है। अनूठा चिनाब ब्रिज पेरिस के एफिल टॉवर से भी 35 मीटर ऊंचा है। इसका निर्माण कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन और इंजीनियरिंग संस्थान आईआईएससी बेंगलुरु द्वारा किया गया है। आईआईटी दिल्ली और आईआईटी रुड़की ने इसकी भूकंप सहनशीलता का विश्लेषण किया, जबकि रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) ने इसके विस्फोट-प्रतिरोधी होने की पुष्टि की।

यह 8 तीव्रता तक के भूकंप के झटके, 40 टन टीएनटी तक का विस्फोट, -20 डिग्री सेल्सियस तक तापमान और 266 किमी. प्रति घंटा की गति वाली आंधी को सहन करने की क्षमता रखता है। दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे पुल माना जाने वाला चिनाब पुल, जम्मू और कश्मीर के रियासी जिले में बक्कल और कौरी के बीच स्थित है। यह उधमपुर, श्रीनगर, बारामुला रेलवे लिंक का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसका उद्देश्य जम्मू और कश्मीर को शेष भारत से जोड़ना है। इसके कारण क्षेत्र में कनेक्टिविटी काफी सुविधाजनक हो गई है।

स्टेच्यू ऑफ इक्वेलिटी

हैदराबाद (तेलंगाना) में स्थित यह विशाल प्रतिमा 11वीं शताब्दी के वैष्णव संत श्री रामानुजाचार्य की है। 5 फरवरी 2019 को, भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद

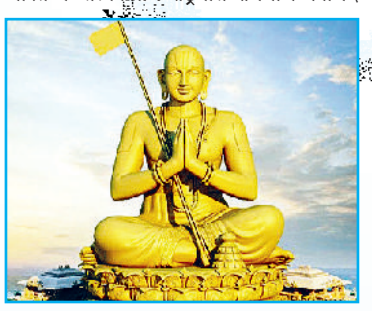

ने इस प्रतिमा का अनावरण किया। यह प्रतिमा समानता, न्याय और करुणा के उस दृष्टिकोण का प्रतीक है, जिसका उपदेश श्री रामानुजाचार्य ने मानवता को दिया था। स्टेच्यू ऑफ इक्वेलिटी की ऊंचाई 216 फीट है, जो संयुक्त राज्य अमेरिका में स्थित स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी के बाद दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी प्रतिमा है। यह मूर्ति एक विशेष कांस्य मिश्र धातु से बनी है, जिसे पंच धातु कहा जाता है। इसमें श्री रामानुजाचार्य को बैठी हुई मुद्रा, कमल मुद्रा, पद्मासन और पारंपरिक मुद्रा में दर्शाया गया है, जो शांति और ध्यान दोनों का प्रतीक माना जाता है। यह प्रतिमा 54 फुट ऊंचे चबूतरे पर स्थापित है, जिस पर संग्रहालय और अनुसंधान केंद्र स्थित हैं। यह चबूतरा रामानुजाचार्य के संदेश के स्तंभों और आधुनिक विश्व में उनकी प्रासंगिकता का प्रतीक है। यह समाज में समानता और देश में एकता का प्रतीक भी है। इसके चारों ओर एक मंदिर परिसर और आगंतुकों के लिए एक उच्च-तकनीकी केंद्र है। यह प्रतिमा और परिसर इंजीनियरिंग के अद्भुत कौशल को प्रदर्शित करता है।

बांद्रा-वर्ली सी लिंक

मुंबई में रहने वाले बहुत से निवासी बांद्रा-वर्ली सी लिंक के जरिए यात्रा करते हैं। यह शानदार केबल-स्टेड ब्रिज भारत की आधुनिक इंजीनियरिंग विशेषज्ञता का एक अनुपम उदाहरण है। 5.6 किलोमीटर लंबा यह पुल बांद्रा और वर्ली के व्यस्त उपनगरों को जोड़ता है, जिससे शहर की भीड़-भाड़ वाली सड़कों पर सफर का समय कम हो जाता है। केबलों को थामे रखने वाले विशाल खंभे समुद्र तल से 128 मीटर ऊपर हैं। 66 फीट चौड़े इस ब्रिज पर आठ लेन में आवागमन होता है। वर्ष 2000 में इसका निर्माण शुरू हुआ और वर्ष 2010 में यह आम जनता के लिए खोल दिया गया।

पीर पंजाल अटल रेलवे सुरंग

वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स द्वारा '10,000 फीट से ऊपर दुनिया की सबसे लंबी राजमार्ग सुरंग' के रूप में दर्ज, अटल सुरंग हिमाचल प्रदेश में मनाली-लेह राजमार्ग पर रोहतांग दर्रे के नीचे स्थित है। चुनौतीपूर्ण भू-भाग और जमा देने वाले तापमान में निर्मित, 9.02 किलोमीटर लंबी इस सुरंग को रोहतांग सुरंग के नाम से भी जाना जाता है। इसका निर्माण सर्दियों के महीनों में राजमार्ग के बंद होने की समस्या को दूर करने के लिए किया गया है, जिससे लाहौल और स्पीति अलग-थलग पड़ जाते थे। सुरंग के निर्माण से मनाली-केलांग मार्ग की दूरी 46 किलोमीटर कम हो गई है, जिससे इस दूरी की यात्रा का समय लगभग चार से पांच

घंटे कम हो गया है। हिमालय में पीर पंजाल पर्वतमाला की चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों को देखते हुए, इस सुरंग के निर्माण के लिए उत्कृष्ट तकनीकी और इंजीनियरिंग कौशल का उपयोग किया गया। यह प्रभावशाली परियोजना आधुनिक सिविल इंजीनियरिंग में भारत की विशेषज्ञता का गौरव है और भारत के सर्वश्रेष्ठ सिविल इंजीनियरिंग चमत्कारों में से एक है। *

धीरूभाई अंबानी इंटरनेशनल स्कूल

मुंबई, महाराष्ट्र में स्थित यह एक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय स्कूल है। यहां वर्षाजल का संचयन और ऊर्जा संरक्षण सहित समकालीन वास्तुकला सुविधाएं मौजूद हैं। डिजाइन से संबंधित आधुनिक विशेषताओं के लिए इसे सर्वश्रेष्ठ स्कूलों में से एक माना जाता है क्योंकि यह स्थिरता के बारे में बहुत कुछ कहता है। स्कूल ने हाल ही में अत्याधुनिक सुविधाओं को शामिल किया है, जिसमें सौर पैनल और जल पुनर्चक्रण प्रणालियों सहित एडवांस्ड ग्रीन टेक्नोलॉजी का उपयोग किया गया है। अत्याधुनिक कक्षाएं और इंटरेक्टिव शिक्षण वातावरण एक सुव्यवस्थित परिसर में जोड़े गए हैं, जो पर्यावरणीय जिम्मेदारी के साथ शिक्षा में उत्कृष्टता पर जोर देते हैं। इंजीनियर्स के योगदान से ही इसका निर्माण संभव हो पाया है।

तेलंगाना राज्य का प्रसिद्ध लोक-महोत्सव बतकम्मा, महिलाओं के सम्मान और प्रकृति से जुड़ाव का प्रतीक पर्व है। भाद्रपद अमावस्या से शुरू होकर दुर्गाष्टमी तक नौ दिनों तक मनाए जाने वाले इस उत्सव के दौरान कला, संस्कृति और प्रकृति के आपसी जुड़ाव की निराली छटा दिखती है।

स्त्री सम्मान-प्रकृति प्रेम का प्रतीक लोक-महोत्सव बतकम्मा

सांस्कृतिक पर्व

सरिता सुराणा

हमारे देश में वर्ष भर त्योहारों का मेला लगा रहता है। सभी क्षेत्र, जाति और धर्म के लोग उत्साह-उमंग से विभिन्न पर्व मनाते हैं। लेकिन अलग-अलग राज्यों में भी अपने-अपने कुछ विशेष त्योहार मनाए जाते हैं। उन्ही में से एक है बतकम्मा पर्व। इसे तेलंगाना राज्य की महिलाएं मनाती हैं।

वातावरण में लहराती हैं स्वर लहरियां

छिन्निमा बतकम्मा, छिन्नारक्का बतकम्मा,
दादी मां बतकम्मा, दामेरमुतक्कल बतकम्मा।

ऐसे गीतों की मधुर स्वर लहरियां जब वातावरण में गूंजने लगती हैं तो समझ आ जाता है कि बतकम्मा पर्व आ गया है और संपूर्ण तेलंगाना में मातृशक्ति के प्रति सम्मान और प्रकृति प्रेम का सैलाब उमड़ रहा है।

इस पर्व में एक प्रतीकात्मक पुष्पों की प्रतिमा बनाई जाती है, जिसे बनाने के लिए कई रंगों के फूलों का उपयोग किया जाता है। इसलिए इसे रंगों का त्योहार भी माना जाता है। पूरे तेलंगाना में यह बतकम्मा पर्व नौ दिनों तक मनाया जाता है। इसमें बहुत सुंदर तरीके से फूलों से अलग-अलग आकृतियां बनाई जाती हैं, इसमें प्रयोग किए जाने वाले ज्यादातर फूल आयुर्वेदिक दृष्टि से भी उपयोगी होते हैं। इसमें फूलों से सात परतों से मंदिर के गोपुरम जैसी आकृति बनाई जाती है। तेलुगु भाषा में बतकम्मा का मतलब होता है, देवी मां जिंदा हैं। इस दिन बतकम्मा को महागौरी के रूप में पूजा जाता है, यह पर्व स्त्रियों के सम्मान के रूप में मनाया जाता है।

कब मनाया जाता है: हिंदू पंचांग के अनुसार यह पर्व श्राद्ध पक्ष, भादो की अमावस्या, जिसे महालय अमावस्या भी कहते हैं, के दिन शुरू होता है और नवरात्र की अष्टमी के दिन खत्म होता है। ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार यह सितंबर-अक्टूबर महीने में मनाया जाता है। इस वर्ष यह पर्व 21 से 30 सितंबर तक मनाया जाएगा। यह मानसून के अंत में शुरू होकर शीत ऋतु के प्रारंभ तक मनाया जाता है।

ऐसे मनाते हैं पर्व: इस पर्व में फूलों से एक बड़े पर्वत जैसी आकृति बनाई जाती है। इसके सबसे ऊपरी भाग में हल्दी से गौरम्मा बनाकर उसे रखा जाता है। इस दौरान नाच-गाने का आयोजन किया जाता है। बतकम्मा का नाम बृहदाम्मा से ही उत्पन्न हुआ है। माना जाता है कि भगवान शिव-पार्वती को प्रसन्न करने के लिए यह त्योहार 1000 साल से उसी इलाके (वर्तमान तेलंगाना) में बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है।

जताते हैं प्रकृति के प्रति आभार: वर्षा ऋतु में सभी जगह पानी का प्रवाह होता है। नदी, तालाब एवं कुएं पानी से भर जाते हैं। उसके बाद धरती पर फूलों के रूप में पर्यावरण में बहार आ जाती है। इसी कारण प्रकृति का धन्यवाद देने के लिए तरह-तरह के फूलों के साथ इस पर्व को मनाया जाता है। इस त्योहार को मनाने के लिए नव विवाहिताएं अपने मायके भी आती हैं। मान्यता है कि उनके जीवन में परिवर्तन लाने के लिए यह प्रथा शुरू की गई थी।

पर्व के शुरुआती पांच दिनों में महिलाएं अपने घर का आंगन स्वच्छ करती हैं और उसको गोबर से लीपा जाता है। सुबह जल्दी उठ कर उस आंगन में सुंदर-सुंदर मुग्गु बनाती हैं। कई जगह पर ऐप्पन से चौक बनाया जाता है, जिसमें सुंदर कलाकृति बनाई जाती है। चावल के आटे से बनी रंगोली का भी बहुत महत्त्व है। इस उत्सव में घर के पुरुष बाहर से नाना प्रकार के फूल एकत्र करते हैं, जिसमें सलोसिया, सेन्ना, मेरीगोल्ड, कमल, ककुर्बिता, कुकुमिस और बहुत से अन्य फूलों को एकत्रित किया जाता है। फूलों की तरह-तरह की परतें बनाई जाती हैं, उनके नीचे फूलों की पत्तियों से सजाया जाता है, इसे थंबलम के नाम से जाना जाता है। नौ दिन तक हर शाम महिलाएं और लड़कियां एकत्रित होकर नाचती, गाती हैं, ढोल बजाए जाते हैं। सब अपने-अपने बतकम्मा को लेकर आती हैं। इस दौरान महिलाएं पारंपरिक साड़ी, गहने पहनती हैं और लड़कियां लहंगा चोली पहनती हैं। सभी महिलाएं बतकम्मा के चारों ओर गोला बनाकर क्षेत्रीय भाषा में गीत गाती हैं। महिलाएं अपने परिवार की सुख-समृद्धि और खुशहाली के लिए माता पार्वती से प्रार्थना करती हैं। अष्टमी पूजा के बाद बतकम्मा को तालाब के पानी में विसर्जित कर दिया जाता है। *

किसी भी ग्रह से टूटकर पृथ्वी पर गिरे उल्कापिंड उस ग्रह के इतिहास और उसकी संरचना को समझने में मदद करते हैं। इसका उपयोग गहनों एवं सजावटी वस्तुओं में भी किया जाता है। यही वजह है कि ग्रहों के इन टुकड़ों की कीमत बहुत अधिक होती है। जानिए इस बारे में विस्तार से।

महत्वपूर्ण और कीमती होते हैं ग्रहों से टूटकर गिरे उल्कापिंड

रोचक

अंजू जैन

हाल ही में मंगल ग्रह से आए एक उल्कापिंड, NWA 16788, की न्यूयॉर्क में 'गीक वीक 2025' नीलामी हुई है। यह उल्कापिंड पृथ्वी पर पाया गया अब तक का सबसे बड़ा मंगल ग्रह का टुकड़ा माना जाता है, जिसका वजन 24.5 किलोग्राम है। इसकी अनुमानित कीमत 15 से 30 करोड़ रुपए (लगभग 1.8 से 3.6 मिलियन अमेरिकी डॉलर) के बीच है।

क्या है NWA 16788: यह एक शर्गोटाइट उल्कापिंड है, जो मंगल ग्रह की भूगर्भीय संरचना के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी देता है। यह सहारा रेगिस्तान में पाया गया था और मंगल ग्रह की सतह से उत्पन्न हुआ माना जाता है। इसकी सतह पर लाल-भूरी फ्यूजन क्रस्ट है, जो अंतरिक्ष में इसकी यात्रा के दौरान उच्च तापमान के कारण बनी। यह मंगल ग्रह की मिट्टी से बना है और इसकी उम्र लगभग 74.2 करोड़ साल पुरानी बताई जाती है।

वैज्ञानिक महत्व: यह उल्कापिंड मंगल ग्रह के इतिहास और संरचना को समझने में मदद करता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि यह उस समय के मंगल ग्रह की सतह का हिस्सा हो सकता है, जब वहां पानी मौजूद था।

मूल्य और विशेषता: इसकी कीमत 15 से 30 करोड़ रुपए के बीच अनुमानित है, जो इसे अब तक के सबसे महंगे उल्कापिंडों में से एक बनाता है।

क्यों होते हैं इतने महंगे: ग्रहों या उल्काओं से टूट कर पृथ्वी पर गिरे टुकड़े, जिन्हें उल्कापिंड कहा जाता है, कई कारणों से महंगे होते हैं। इनमें शामिल हैं-

दुर्लभता: उल्कापिंड अंतरिक्ष से पृथ्वी पर बहुत कम मात्रा में पहुंचते हैं। इनमें से कुछ विशेष प्रकार, जैसे चंद्रमा या मंगल ग्रह से आए उल्कापिंड, अत्यंत दुर्लभ होते हैं, जिससे उनकी कीमत बढ़ जाती है।

वैज्ञानिक महत्व: उल्कापिंड ग्रहों की उत्पत्ति के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं। वैज्ञानिक इनका अध्ययन ग्रहों की भौतिक-रासायनिक संरचना और प्राचीन इतिहास को समझने के लिए करते हैं, जिससे इनकी मांग बढ़ती है।

सौंदर्य और संग्रहणीयता: कुछ उल्कापिंडों में अनोखे पैटर्न (जैसे विडमैनस्टेटन पैटर्न) या रंग होते हैं, इस कारण इनका उपयोग गहनों या सजावटी वस्तुओं के निर्माण में भी किया जाता है।

उत्पत्ति: चंद्रमा, मंगल या विशिष्ट क्षुद्रग्रहों से आए उल्कापिंड अत्यंत मूल्यवान होते हैं, क्योंकि ये पृथ्वी के बाहर की सामग्री होते हैं। उल्कापिंडों को खोजने, पुनर्प्राप्त करने और उनकी प्रामाणिकता सत्यापित करने में समय, संसाधन और विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है।

सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व: कुछ संस्कृतियों में उल्कापिंडों को पवित्र माना जाता है, जैसे भारत में कुछ प्राचीन मंदिरों में रखे गए उल्कापिंड।

ग्रहों के टुकड़ों के प्रकार: ग्रहों से टूट कर पृथ्वी पर गिरे टुकड़ों के कई प्रकार होते हैं, जैसे-

उल्का पिंड: जब उल्का पृथ्वी के वायुमंडल से गुजर कर सतह पर पहुंचती है, तो उसे उल्कापिंड कहते हैं।

उल्का: अंतरिक्ष से पृथ्वी की ओर आने वाला पदार्थ जो वायुमंडल में जलता है और 'टूटता तारा' जैसा दिखता है।

क्षुद्रग्रह: अंतरिक्ष में चक्कर लगाने वाले बड़े चट्टानी पदार्थ, जिनके टुकड़े उल्कापिंड के रूप में पृथ्वी पर गिर सकते हैं।

चंद्र उल्का पिंड: चंद्रमा से उत्पन्न होने वाले उल्का पिंड।

मंगल उल्का पिंड: मंगल ग्रह से आए उल्कापिंड।

पैलासाइट: लोहे और सिलिकेट खनिजों से बने विशेष उल्का पिंड, जो अकसर सुंदर क्रिस्टल पैटर्न दिखाते हैं।

कोन्ड्राइट: सबसे आम उल्कापिंड, जिनमें सौरमंडल की प्राचीन सामग्री होती है।

इनके अलावा भी विभिन्न ग्रहों से टूटकर गिरे टुकड़ों या उल्कापिंडों के अलग-अलग कई प्रकार एवं अलग-अलग नाम होते हैं।

अब हम आपको अब तक मिले कुछ बेहद महत्वपूर्ण उल्कापिंड और उनकी कीमत के बारे में बताते हैं।

होबा उल्कापिंड: नामीबिया में 1920 ई. में पाया गया लगभग 60 टन वजनी यह उल्कापिंड अब तक का ज्ञात सबसे बड़ा एकल उल्कापिंड है। इसका बाजार मूल्य निर्धारित नहीं है, क्योंकि यह वहां की राष्ट्रीय संपत्ति है, लेकिन इसकी कीमत अरबों रुपए हो सकती है।

फुकांग पैलासाइट: साल 2000 में चीन में पाया गया यह उल्का पिंड पैलासाइट (लोहा और ओलिवाइन क्रिस्टल) कैटेगरी का है। यह अपने सुंदर क्रिस्टल पैटर्न के लिए प्रसिद्ध है। इस उल्कापिंड के इसके छोटे टुकड़ों की कीमत 20 से 50 डॉलर प्रति ग्राम तक हो सकती है।

चेल्याबिंस्क उल्कापिंड: साल 2013 में रूस में गिरा साधारण कोन्ड्राइट प्रकार का यह उल्का पिंड एक खास वजह से प्रसिद्ध है। दरअसल, 2013 में इसके गिरने से एक बड़ा विस्फोट हुआ था, जिसने इसे विश्व प्रसिद्ध बनाया। इसके टुकड़ों की कीमत 1 से 10 डॉलर प्रति ग्राम तक रही है।

नखला उल्कापिंड: मिस्र में साल 1911 में गिरा यह उल्कापिंड मंगल ग्रह से गिरे होने की पुष्टि वाला पहला उल्कापिंड है। इसकी कीमत प्रति ग्राम 100 से 300 डॉलर तक तक हो सकती है।

एलेंडे उल्कापिंड: मैक्सिको में 1969 ई. में गिरे कार्बोनेशियस कोन्ड्राइट प्रकार के इस उल्कापिंड में सौरमंडल की सबसे प्राचीन सामग्री और कार्बनिक यौगिक पाए गए हैं, जो जीवन की उत्पत्ति के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण हैं। इसकी कीमत प्रति ग्राम 1 से 5 डॉलर अनुमानित है। लेकिन इसके दुर्लभ टुकड़ों की कीमत अधिक हो सकती है। *

सिने संवाद

डी.जे. नंदन

बॉलीवुड फिल्मों की बात करें तो शुरुआत से लेकर अब तक की फिल्मी संवाद की भाषा हिंदी में अनेक परिवर्तन देखने को मिलते हैं। हर अदाकार अपने अंदाज में हिंदी तो बोलता ही है, समय और पीढ़ी के अनुसार भी इसमें बदलाव आते रहे हैं। इन बदलावों पर एक नजर।

पहले के दौर से कितनी बदली बॉलीवुड फिल्मों की हिंदी

'राजी' में आलिया भट्ट के संवाद रहे असरदार

क्षेत्रीय प्रभाव से मुक्त हैं 'गुड लक जेरी' के संवाद

अगर आप हिंदी फिल्मों के शौकीन हैं तो बॉलीवुड फिल्मों में बोली जाने वाली आज की हिंदी में पिछली सदी के पचास, साठ, सत्तर और अस्सी के दशकों की बॉलीवुड फिल्मों में बोली जाने वाली हिंदी से कुछ अंतर महसूस करते होंगे। क्या फर्क है तब और अब की फिल्मों की हिंदी में, एक दृष्टि डालते हैं।

बीते दौर की बॉलीवुड फिल्मों में हिंदी: पिछली सदी के सत्तर और अस्सी के दशक के एक्टर्स की बात करें तो अमिताभ बच्चन की हिंदी बहुत समृद्ध थी, साथ ही उसमें हमेशा 'संवाद अदायगी' का एक मंचीय असर दिखता था। उनसे पूर्व दिलीप कुमार के संवाद इतने अधिक अभिनय केंद्रित हुआ करते थे कि दर्शक डायलॉग्स को सुनने की बजाय देखने लगता था। दिलीप

'उधम सिंह' में विक्की कौशल

कुमार के संवादों में हिंदी-उर्दू मिश्रित भाषा देखने को मिलती है।

ऐसे ही अभिनेता राजकुमार की संवाद अदायगी में उर्दू-शैली का असर दिखता था, जो उनकी अभिजातीय छवि का हिस्सा बनता था। उदाहरण के तौर पर फिल्म 'पाकीजा' में उनकी संवाद अदायगी को देखा जा सकता है। अपने जमाने में राजेश खन्ना या शत्रुघ्न सिन्हा जैसे अभिनेता अकसर अपने मूल क्षेत्रीय लहजों को पूरी तरह छोड़े बिना हिंदी बोलते थे। यह उस दौर में 'स्वाभाविक' ही माना जाता था।

अपने दौर की बेहतरीन अभिनेत्री स्मिता पाटिल भाषा को साधने में माहिर थीं। वह बहुत अच्छी हिंदी बोलती थीं। उनके द्वारा बोले गए संवाद बहुत गूंजदार, ठहराव से भरे होते थे। उनके संवादों में लयात्मकता होती थी और इसमें कविताई का आभास होता था। समग्रता में देखा जाए तो पिछली सदी के 70 और 80 के दशक में अभिनेता हिंदी को एक खास छंद, ठहराव और 'दबाव' के साथ बोलते थे। यह एक 'शास्त्रीय लहजा' था, जो दिलीप कुमार, अमिताभ बच्चन, शबाना आजमी, स्मिता पाटिल आदि कलाकारों की संवाद अदायगी में दिखता था।

आज के फिल्मों की हिंदी: हर दौर की अपनी एक अलग भाषा, संवाद का एक अलग सलीका होता है। यह बात हिंदी फिल्मों पर भी लागू होती है। आज की फिल्मों की हिंदी पहले की फिल्मों से बेहतर भले न हो, यह पहले की तुलना में अलग जरूर है और असरदार भी। आज फिल्मों में बोली जाने वाली हिंदी ज्यादा लचीली, संवादधर्मी और ग्लोबल शहरी अनुभव से जुड़ी है। यह किसी खास उच्चारण और लहजे में नहीं बोली जाती बल्कि यह हमारे-आपके जैसे सामान्य लोगों की तरह ही बोली जाती है।

हिंदी बोलने में दिखता है आत्मविश्वास: आज की पीढ़ी के अभिनेता और अभिनेत्रियां हिंदी को पूरे आत्मविश्वास से बोलते हैं। उदाहरण के तौर पर फिल्म 'सरदार उधम सिंह' के संवाद 'जो लहू नहीं खौला, वो लहू नहीं...' को देखा जा सकता है। फिल्म में विक्की कौशल पूरे आत्मविश्वास और गहराई के साथ हिंदी बोलते हैं। न संवादों में कोई बनावट, न हिचक। फिल्म के संवादों के उच्चारण में हिंदी की शुद्धता भले गायब हो, लेकिन हिंदी के लिए गर्व और सहजता यहां साफ देखा जा सकता है।

दिखता है सहज भाषाई प्रवाह: आज की बॉलीवुड फिल्मों में सहज भाषाई प्रवाह दिखता है। इसका एक खूबसूरत उदाहरण आलिया भट्ट की फिल्म 'राजी' है। इस फिल्म में

भाषा को साधने में माहिर थीं स्मिता पाटिल

एक कश्मीरी लड़की की भूमिका निभाते हुए आलिया ने जिस तरह की हिंदी बोली है, उसमें पानी जैसा बहाव है। कोई भी शब्द या संवाद अतिरिक्त जोर देकर नहीं बोला गया था, फिर भी ये असरदार थे।

क्षेत्रीय प्रभाव से मुक्त हिंदी: आज के दौर की फिल्मों में बोली जाने वाली हिंदी की एक और खास बात यह है कि आज के ज्यादातर अभिनेताओं और अभिनेत्रियों का उच्चारण और लहजा क्षेत्रीयता से मुक्त है। उदाहरण के तौर पर जान्हवी कपूर की 'गुड लक जेरी' को देखा जा सकता है। फिल्म में जान्हवी को बिहारी-पंजाबी पृष्ठभूमि का दिखाया गया है, फिर भी उनका उच्चारण क्षेत्रीयता से मुक्त 'न्यूट्रल शहरी हिंदी' जैसा है।

कैजुअल फ्लुएंसी पर जोर: आज के अभिनेताओं को मंचीय प्रशिक्षण, स्क्रिप्ट वर्कशॉप्स और संवाद को स्वाभाविक बनाने की ट्रेनिंग मिलती है। आज के दौर में संवाद अदायगी की नाटकीय शैली के स्थान पर रोजमर्रा की जिंदगी में बोली जाने वाली हिंदी और इसकी कैजुअल फ्लुएंसी पर जोर दिया जाता है। विक्की कौशल, राजकुमार राव, तापसी पन्नू, भूमि पेडनेकर, ये सभी संवादों में हिंदी को आत्मसात करके बोलते हैं। ये हिंदी को 'परफॉर्म' नहीं करते, बल्कि 'जीते' हैं।

कुल मिलाकर, फिल्मों में आज की पीढ़ी की हिंदी ज्यादा कैजुअल, लचीली और वास्तविक जिंदगी से जुड़ी लगती है। पहले के फिल्मों की हिंदी भाषा में 'भाषाई सौंदर्य' था, आज के फिल्मों की हिंदी में 'संवादिक सहजता' है। *